

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अप्रैल 2024

अंक 451 ● अप्रैल 2024

# चंकमंक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50

1

# गप्पी जी का सपना

राजेश जोशी  
चित्र: मयूख घोष

गप्पी जी को पढ़ते-पढ़ते  
लग गई झपकी।  
सपने की एक बूँद  
तभी खोपड़ी पे  
टपकी।

अचानक सीख गए  
गप्पी जी उड़ना।  
उड़ते-उड़ते जाने किधर निकल गए  
भूल गए  
घर की तरफ  
मुड़ना।



# चक्मळ

## इस बार

गप्पी जी का सपना - राजेशा जोशी	2
देख बहारें होली की - इश्तियाक	4
भूलभुलैया	7
तुम भी बनाओ - साँप - प्रभाकर डबराल	8
देखा-अनदेखा - हेलेन केलर	9
अन्तर ढूँढो	10
कला के आयाम - कला और जंग - शोफाली जैन	12
क्यों-क्यों	16
नदी - केदारनाथ अग्रवाल	20
चनाई नदी के पास - विमल चित्रा	20
गाय की शैतानी - वेदान्त	22
समय नापने का संक्षिप्त इतिहास... - जाक प्रैन्डरगैस्ट	23
माथापच्ची	28
गणित है मजेदार - तेरी तारीख मुझे पता है - आलोका कान्हेरे	28
चित्रपहेली	34
मेरा पत्ता	36
तुम भी जानो	43
ट्रीपाई का नाश्ता - रोहन चक्रवर्ती	44

आवरण: सुरगी, सात साल, स्टूडियो रनिं  
स्टिच, बैंगलूरु, कर्नाटका

सम्पादक  
विनता विश्वनाथन  
सह सम्पादक  
कविता तिवारी  
विज्ञान सलाहकार  
सुशील जोशी  
उमा सुधीर

डिजाइन  
कनक शशि  
सलाहकार  
सी एन सुब्रह्मण्यम्  
शशि सबलोक  
वितरण  
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50  
सदस्यता शुल्क  
(रजिस्टर्ड डाक सहित)  
वार्षिक : ₹ 800  
दो साल : ₹ 1450  
तीन साल : ₹ 2250  
एकलव्य

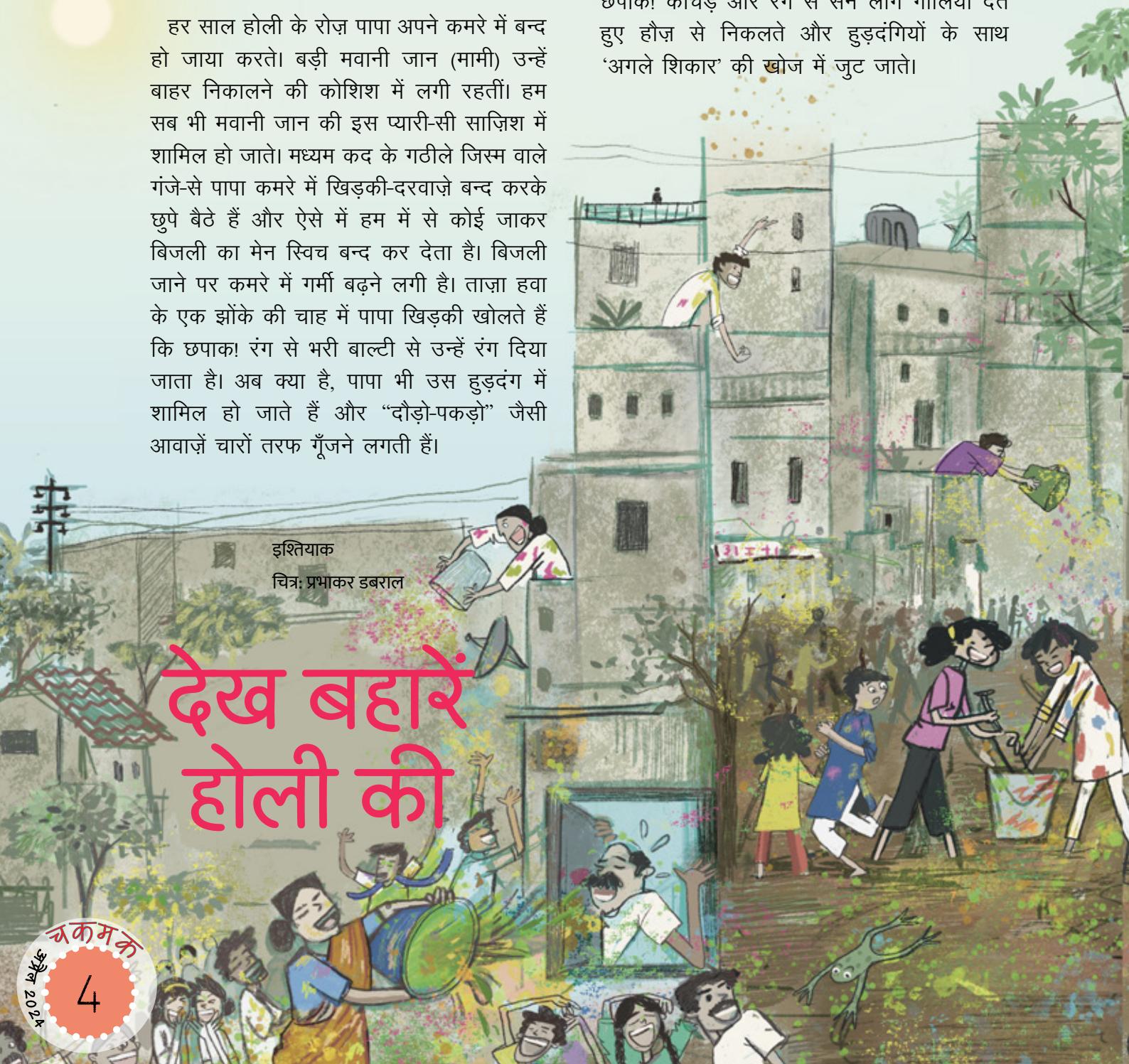
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,  
वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/बैंक से भेज सकते हैं।  
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:  
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल  
खाता नम्बर - 10107770248  
IFSC कोड - SBIN0003867  
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी  
[accounts.pitara@eklavya.in](mailto:accounts.pitara@eklavya.in) पर जरूर दें।

अब मौसम बदलने लगा है। सर्दी अपनी बर्फीली चादर समेटने लगी है। धूप में तपिश महसूस होती है। पर हवा अब भी सुहानी है। इस बौराई हवा के साथ यादों की कई खिड़कियाँ खुलने लगती हैं जिनमें से गए दिनों के किस्से झाँकते-फुदकते निकल आते हैं और आँखों के सामने तैरने लगते हैं। कई यादें एक साथ ताज़ा हो जाती हैं। इनमें होली के दिनों की कई खूबसूरत यादें भी हैं।

हर साल होली के रोज़ पापा अपने कमरे में बन्द हो जाया करते। बड़ी मवानी जान (मामी) उन्हें बाहर निकालने की कोशिश में लगी रहतीं। हम सब भी मवानी जान की इस प्यारी-सी साज़िश में शामिल हो जाते। मध्यम कद के गठीले जिस्म वाले गंजे-से पापा कमरे में खिड़की-दरवाज़े बन्द करके छुपे बैठे हैं और ऐसे में हम में से कोई जाकर बिजली का मेन स्विच बन्द कर देता है। बिजली जाने पर कमरे में गर्मी बढ़ने लगी है। ताज़ा हवा के एक झौंके की चाह में पापा खिड़की खोलते हैं कि छपाक! रंग से भरी बाल्टी से उन्हें रंग दिया जाता है। अब क्या है, पापा भी उस हुड़दंग में शामिल हो जाते हैं और “दौड़ो-पकड़ो” जैसी आवाज़ें चारों तरफ गूँजने लगती हैं।

हमारे घर के सामने एक बड़ा-सा हौज़ था। उसमें साल भर थोड़ा बहुत पानी जमा रहता था और नन्हे मेंढक अगले दोनों पैर ऊपर उठाए तैरते रहते थे। होली आते ही उस हौज़ में पानी भरा जाता जिससे नीचे जमी मिट्टी कीचड़ बन जाती। ऊपर से गाढ़-पक्के रंग पानी में मिलाए जाते। इस तैयारी के बाद लोग ‘शिकार’ की तलाश में निकलते। जो भी पकड़ में आता उसे उठा लिया जाता और हौज़ में लाकर छपाक! कीचड़ और रंग से सने लोग गालियाँ देते हुए हौज़ से निकलते और हुड़दंगियों के साथ ‘अगले शिकार’ की खोज में जुट जाते।



# देख बहारें होली की

इश्तेयाक  
चित्र: प्रभाकर डबराल

हम एक बड़े-से कैम्पस में रहते थे जिसमें कई घर थे। घरों के बीच में एक बड़ा-सा आँगन था। एक साहब थे 'सगीर साहब'। वे पापा के दोस्त थे और कैम्पस में किराएदार थे। हम उन्हें सगीर चचा और उनकी बीवी को सगीर चच्छी कहते थे। चच्छी होली की हुड़दंग में हमेशा आगे-आगे रहतीं। छोटे कद की गोल-मटोल सी चच्छी। गोल साँवले चेहरे पर बिलकुल तोते की चोंच जैसी नाक और वैसी ही गोल-गोल आँखें। चच्छी हमेशा सबसे पहले शिकार बन जातीं। हौज में जमे कीचड़ और रंग की एक डुबकी के साथ उनकी जबान से ऐसी गालियाँ बरसतीं कि तौबा-तौबा! अम्मी को हिदायत भी देती जातीं, "अजी मेहर, अपने मियां को सँभालो। मौलाना हाथ से निकले जा रहे हैं।" अम्मी हँसकर जवाब देतीं, "अभी तो भाभी आप खुद को सँभालिए।"

यह सब धमाचौकड़ी कोई 12-12:30 बजे तक चलती। फिर सब नहाते-धोते। जल्दी-जल्दी खिचड़ी बनाई जाती, सतभतरी खिचड़ी। सतभतरी इसलिए क्योंकि इसके साथ अचार और चटनी-भर्ती की सात किस्में तो ज़रूर होती थीं। इसके बाद शाम की तैयारियाँ शुरू हो जातीं।

अक्सर शाम को होली-मिलन का समारोह होता था। होली मिलन मतलब 75-100 लोगों का जमावड़ा। अब भला इतने बड़े जश्न का इन्तज़ाम किसी अकेले के बस का काम तो कर्त्तव्य नहीं था। लेकिन तब यह इतना मुश्किल भी नहीं था। गली-मोहल्ले की कई औरतें जमा हो जातीं। आँगन में ईटों से चूल्हे बनाए जाते। ऐसे में हम बच्चों की पूछ काफी बढ़ जाती। "जा बेटा, भाग के इमली ले आ।" "ओहो, नारियल कम पड़ जाएगा। दो रुपए का नारियल तो ले आ।" ऐसे निर्देश लगातार मिलते रहते और हम चकरघिन्नी की तरह भागते रहते।

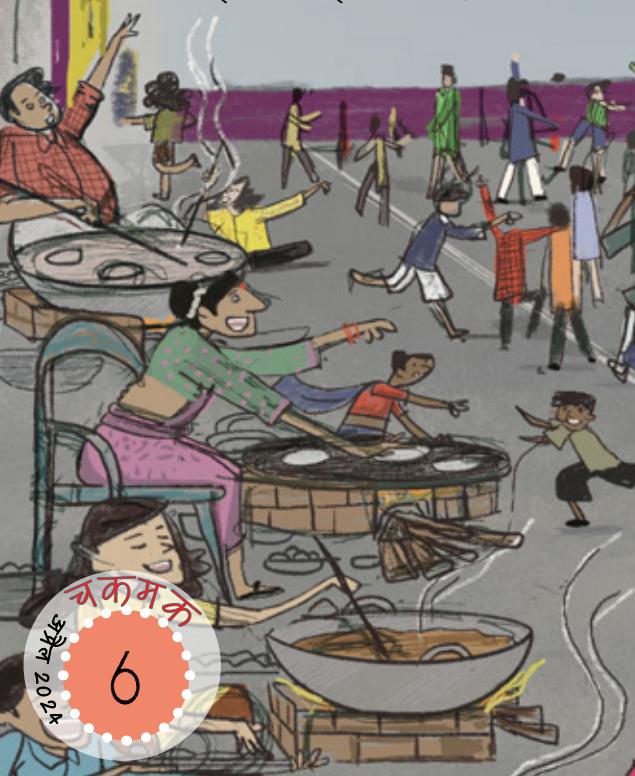
शाम 6-6:30 बजे से लोगों का आना शुरू हो जाता। लोगों में ज्यादातर पापा के कामरेड होते या मोहल्ला शान्ति समिति के सदस्य। आनेवालों में एक दल होता मेरी नाटक मण्डली के लोगों का।

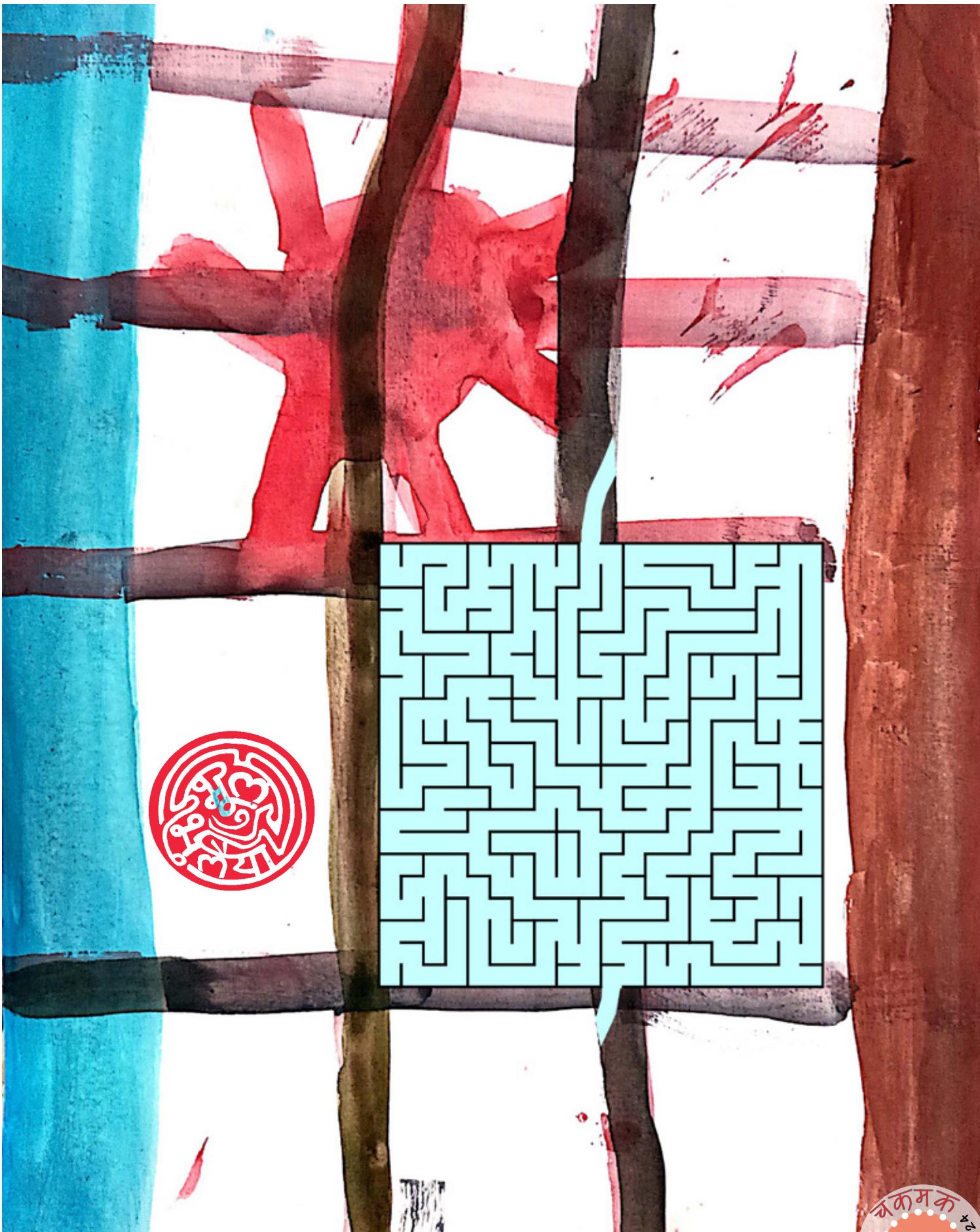


इस कार्यक्रम में इस दल का अपना ही अन्दाज़ होता। हम गीत गाते। हमारे गीतों में होती नज़ीर अकबराबादी की होली “जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की” हम ‘जोगीरा’ ज़रूर गाते – “सत्ता की इस रेल का चक्का हो गया जाम, चल रे मनवा लौट चल बैदनाथ के धाम, कि पण्डागिरी करूँगा” कार्यक्रम का आखिरी पड़ाव होता खाने-पीने का। पुए, खीर और हरे चने का बचका, यह तीन चीज़ें ज़रूर होतीं। खाना-खिलाना कोई 8-8:30 बजे तक चलता। दोस्तों के घर जाने का वक्त इसके बाद आता। घर लौटते-लौटते रात के 12-12:30 बज ही जाते थे।

एक बार कैम्पस में नई-नई आई एक बुजुर्ग मोहतरमा ने अम्मी से पूछा, “अंय जी मेहर, तुम्हरे यहाँ ईद-बकरीद में भी मजमा लगा रहे हैं और होली-दिवाली में भी। अपना परब मनावो” अम्मी का जवाब अब भी याद है। बोलीं, “परब-त्यौहार में अपना-पराया क्या चच्ची? परब-त्यौहार तो खुशी मनाने, मिलने-मिलाने का बहाना है। इसमें भेदभाव क्या करना?” बेचारी चच्ची के पास इसका कोई जवाब नहीं था।

होली से जुड़ा एक और वाक्या उतनी ही शिद्दत से याद है। उस साल मैट्रिक यानी दसवीं का इस्तिहान था और होली आ गई। मेरे कई दोस्त, जिनमें श्रीकांत भैया भी थे, होली खेलने ले जाने आए। अम्मी उन्हें अपना बड़ा बेटा मानती थीं और उतना ही चाहती थीं। हम इस्तिहान का बहाना बनाकर जाने से मना कर रहे थे और हमारे साथी अपनी जिद पर अड़े थे। उनमें श्रीकांत भैया सबसे आगे थे। और तभी कुछ ऐसा हुआ जिसका अन्देशा किसी को न था। पापा अपने कमरे से निकले और काफी तल्ख अन्दाज़ में मेरे साथियों को जाने के लिए कहा। सभी चुपचाप चले गए। मानो गौरैयों का एक चहकता हुआ झूँण अचानक खामोश हो गया। वो शर्मिन्दगी अब तक बरकरार है।

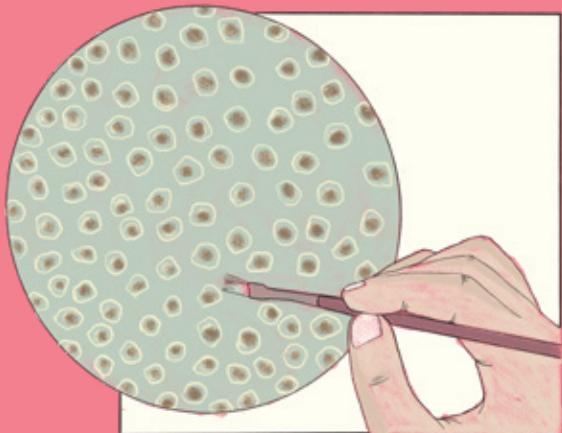




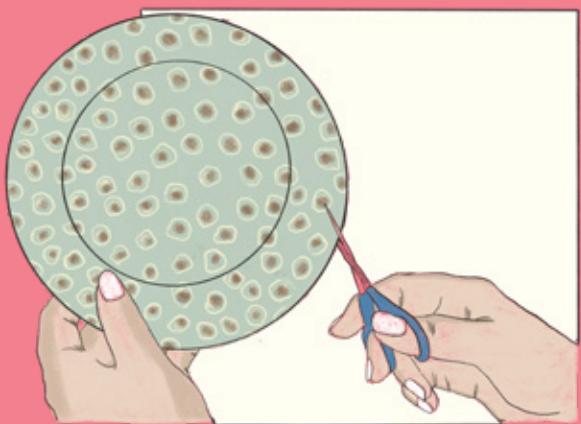
चित्र: ग़जल फारूक काझी, दूसरी, ज़िला परिषद प्राथमिक स्कूल, गौडवाडी, सांगोला, सोलापुर, महाराष्ट्र

# तुम्हीओ साँप

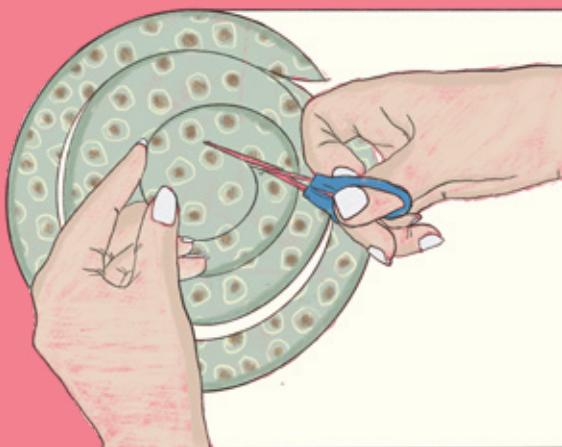
सामग्री: पेपर प्लेट या मोटा कागज़, रंग, ब्रुश, कैंची और ग्लू।



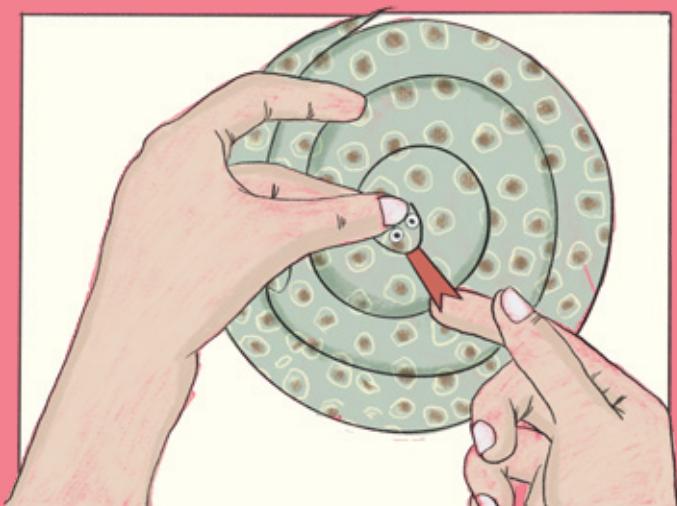
1. एक गोलाकार पेपर प्लेट या मोटा कागज़ लो। उस पर ब्रश और पेंट से अपनी पसन्द का पैटर्न बना लो।



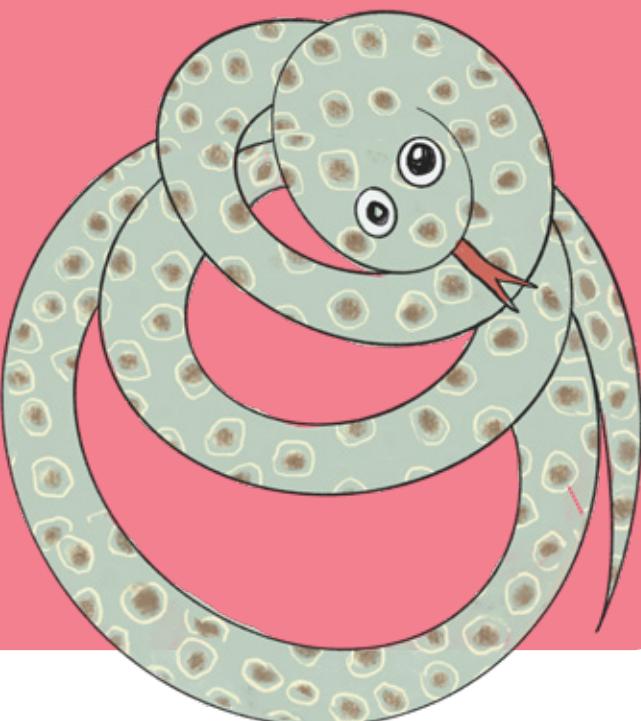
2. अब कागज के एक किनारे से गोलाई में काटना शुरू करो।



3. तब तक काटते रहो जब तक तुम कम से कम चार लूप ना बना लो। चाहो तो ज्यादा लूप भी बना सकते हो।



4. दो छोटे गोले काटकर आँखें बना लो और साँप के सिर पर चिपका लो। जीभ के लिए गुलाबी कागज का एक छोटा-सा दुकड़ा काटकर चिपका लो।



5. बस हो गया तुम्हारा साँप तैयार।

# देखा-अनढ़ेखा

हेलेन केलर

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

कभी-कभी मैं अपने उन दोस्तों की परीक्षा लेती हूँ जो देख सकते हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि वे क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक बहुत अजीज़ दोस्त मेरे यहाँ आई। एक दिन जब वो जंगल की लम्बी सैर से बस लौटी ही थी मैंने उससे पूछा कि उसने क्या देखा। “कुछ खास नहीं,” उसने जवाब दिया। मुझे आश्चर्य होता अगर मुझे इस किस्म के जवाबों की आदत ना होती। क्योंकि बहुत पहले ही मुझे यह यकीन हो गया था कि जो लोग देख सकते हैं, वो असल में कम देखते हैं।

मैंने अपने आप से पूछा – ये कैसे मुमकिन है कि कोई एक घण्टे तक जंगल में टहले और याद रखने लायक कुछ ना देखे? मुझे, जिसे दिखता नहीं है, महज स्पर्श के ज़रिए सैकड़ों ऐसी चीज़ों मिल जाती हैं जो मुझे रोचक लगती हैं। भोजपत्र की मुलायम छाल या चीड़ की खुरदुरी जर्जर छाल के ऊपर मैं प्यार-से अपने हाथ फेरती हूँ। बसन्त में मैं पेड़ों की टहनियों को इस उम्मीद से छूती हूँ कि शायद कोई कली मिल जाए। किसी फूल की मनोहर, मखमली बनावट को छूती हूँ

और उसके अनूठे घुमावों का पता करती हूँ; और प्रकृति के चमत्कार का एक छोटा-सा हिस्सा मेरे सामने ज़ाहिर होता है। कभी-कभार, मेरी किस्मत बढ़िया हो तो, मैं हल्के-से अपना हाथ एक छोटे पेड़ पर रखती हूँ और किसी चिड़िया के मस्त-मग्न गाने के खुशनुमा कम्पन को महसूस करती हूँ। अपनी खुली उँगलियों के बीच से किसी झरने के ठण्डे पानी के बह जाने से मैं आनन्दित हो उठती हूँ। किसी शानदार ईरानी कालीन से ज्यादा मुझे चीड़ के नुकीले पत्तों का हरा-भरा गलीचा पसन्द है। मौसमों की प्रदर्शनी मेरे लिए एक रोमांचक और अनन्त नाटक है, जिसकी घटनाएँ मेरी उँगलियों के पोरों से लहराती हुई निकल जाती हैं।

कभी-कभी इन सब चीजों को देखने की तमन्ना से मेरा दिल चीख उठता। सिर्फ स्पर्श से अगर मुझे इतनी खुशी मिल सकती है तो नज़र से कितनी ज्यादा सुन्दरता दिखती होगी! लेकिन, साफ समझ में आता है कि जिनके पास आँखें हैं वे कितना कम देखते हैं। रंगों और गतिविधियों की दृश्यावली, जिनसे दुनिया भरी पड़ी है, का मूल्य समझा नहीं गया है। यह मानवीय है, शायद, जो हमारे पास है उसकी कम कदर करना और जो नहीं है उसको चाहना। लेकिन ये बड़े खेद की बात है कि रौशनी की दुनिया में नज़र का तोहफा सिर्फ एक सहूलियत बनकर रह गया है, बनिस्बत इसके कि वो ज़िन्दगी में परिपूर्णता लाने का एक ज़रिया हो।

## इन दो चित्रों में दस से ज्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?



अगर मैं किसी विश्वविद्यालय की अध्यक्ष होती तो मैं 'अपनी आँखों का तुम कैसे इस्तेमाल कर सकते हो' नामक एक अनिवार्य कोर्स स्थापित करती। प्रोफेसर अपने छात्रों को यह दिखाने की कोशिश करते कि जो कुछ उनके सामने से अनदेखा गुज़र जाता है, उसे गौर-से देखने से वे कैसे अपनी ज़िन्दगी को और खुशगवार बना सकते हैं।

इस लेख को अपने दोस्तों के साथ पढ़ना। फिर कुछ गुट बना लेना। हर गुट ये चर्चा करे कि 'अपनी आँखों का इस्तेमाल कैसे करें' के किसी कोर्स में किन-किन विषयों को शामिल कर सकते हैं।

हेलेन केलर एक प्रख्यात अमरीकी लेखक थीं। वे जन्म से अन्धी और बहरी थीं।

उपरोक्त लेख जनवरी 1933 में द एटलांटिक पत्रिका में छपे लेख 'थ्री डेज टू सी' का अंश है।

मुक्त

चित्र: शुभम लखेरा



दृढ़ो अन्तर  
अप्स

By Yunus Ghaffur

Age : 2



चित्र: मैनचेस्टर, यूनाइटेड किंगडम से यूनूस गफूर द्वारा समी अब्देल करीम गोदा के लिए।

## कला के आयाम कला और जंग

शेफाली जैन

क्या तुम जानते हो कि दुनिया भर के इतिहास में जब-जब जंग छिड़ी है और उससे हिंसा फैली है, तब-तब वहाँ के बच्चों ने जंग के प्रति अपने विचार चित्रों, कविताओं, चिट्ठी या फिर डायरी के माध्यम से व्यक्त किए हैं। कई मौकों पर तुमने भी शान्ति और अमन का सन्देश देने वाली रचनाएँ बनाई होंगी। मेरे बचपन की याद है। तब मैं शायद

छठवीं कक्षा में पढ़ रही थी। गाँधी जयन्ती के मौके पर हमारे स्कूल ने हम बच्चों को एक चित्र प्रतियोगिता में भेजा था। प्रतियोगिता का विषय था – अमन और शान्ति। बाद में इनमें से कुछ चुनिन्दा चित्रों को कार्ड पर प्रिंट करके लोगों के बीच शान्ति का सन्देश बाँटा गया था।

शान्ति के विषय पर हम बच्चे अक्सर कबूतर का चित्र बनाते थे क्योंकि इसे काफी देशों में शान्ति का प्रतीक माना गया है। ये कितनी प्यारी बात है ना कि एक पक्षी, जो अपने पंखों के सहारे खुले आसमान में उड़ान भर सकता है और सरहदें पार कर सकता है, को शान्ति और अमन का प्रतीक

बनाया जाए? पर केवल कबूतर ही क्यों? क्या अन्य पक्षी भी शान्ति और अमन का प्रतीक बन सकते हैं? चलो, आज मैं तुम्हें एक ऐसे आर्ट प्रोजेक्ट के बारे में बताती हूँ जिसमें दुनिया भर के बच्चों ने अलग-अलग तरह के पक्षियों के चित्र बनाकर अमन का सन्देश फैलाया है। ये आर्ट प्रोजेक्ट मिडिल ईस्ट में हो रही जंग के बारे में है।

आजकल टीवी पर गाज़ा में रोज़ हो रही बमबारी के बारे में तुम ज़रूर सुन रहे होगे। इजराइल और हमास के बीच की इस जंग में 29,000 से ज्यादा फिलीस्तानी और 1,400 से ज्यादा इजराइलियों की जानें गई हैं। गाज़ा में मारे जाने वाले लोगों में बड़ी संख्या बच्चों की है। फरवरी के अन्त तक गाज़ा में 12,500 से ज्यादा बच्चे बमबारी से मारे गए हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कानून के तहत आम लोगों की खासकर बच्चों की इस जंग में हत्या को धोर अपराध करार किया गया है। फिर ये चाहे किसी भी पक्ष से हुआ हो।

इस जंग के बारे में लोगों के मन में कई सवाल उठे हैं। इनमें से एक है कि क्या तुम और मैं इस जंग को, किसी भी जंग को, रोक सकते हैं? हमारी बात हम कैसे रखें, किसे सुनाएँ? क्या कला इसमें हमारा साथ दे सकती है? ऐसे कुछ सवालों को मन में रखते हुए ही शायद कुछ लोगों ने एक सामुदायिक कला प्रोजेक्ट (कम्युनिटी आर्ट प्रोजेक्ट) शुरू किया। यह प्रोजेक्ट खास तौर पर बच्चों के लिए है। इस प्रोजेक्ट का नाम है – ‘बड़स ऑफ गाज़ा’ मतलब ‘गाज़ा के पक्षी’। सामुदायिक कला, कला का एक ऐसा रूप है जिसमें आम लोग, अक्सर वंचित/उत्पीड़ित समुदाय के लोग, एकजुट होकर कला के माध्यम से सामाजिक मसलों पर अपनी आवाज़ उठाते हैं।



चित्र: वेल्स, यूनाइटेड किंगडम से टेरेन ओ कॉनोर द्वारा खालिद मोहम्मद जामिल अल-जनीं के लिए।

बड़स ऑफ गाज़ा प्रोजेक्ट इजराइल और हमास के बीच की इस जंग में मारे गए बच्चों के नाम इकट्ठे कर रहा है। और इन नामों की सूची एक वेबसाइट पर डालता जा रहा है। एक पक्षी का चित्र बनाकर कोई भी बच्चा उस चित्र को सूची में दिए किसी भी बच्चे के नाम कर अमन का सन्देश भेज सकता है। इस तरह दुनिया भर में कोई भी बच्चा इस जंग में मरने वाले बच्चे के प्रति अपना दुख और जंग के प्रति अपना गुस्सा, इन्कार, प्रतिरोध भी व्यक्त कर सकता है।

बच्चों द्वारा बनाए पक्षियों के इन चित्रों को तुम इस वेबसाइट पर देख सकते हो - <https://www.birdsofgaza.com/> वेबसाइट से लिए गए कुछ चित्र तुम इन पर्नों पर भी देख सकते हो।

चित्र: भारत से याहवी द्वारा मारिया अहमद सालाह कुर्दीह के लिए।



चित्र: ईस्ट  
लन्दन साउथ  
अफ्रीका से  
फिनले द्वारा  
आमेर फौद  
उमर अल ज़ीन  
के लिए।



Dedicated to Amer Fouad  
Omar el Zein



चित्र: सिंगापुर  
से आइदा जे  
द्वारा जनाह  
मुहम्मद  
अब्देल  
हाफिज़ अबु  
दाहर के  
लिए।



चित्र: ऑक्सफोर्ड, यूनाइटेड किंगडम से नुसायबाह  
द्वारा रजान हाजिम खलील जकौत के लिए।

चित्र: भारत  
से आर्यु द्वारा  
मारवा हम्जा  
नसीर अल-  
अस्तल के  
लिए।



चित्र: पाकिस्तान से उमर बिन आफान द्वारा युसूफ मुहम्मद आतिफ अल-कुर्द के लिए।

इतिहास में और आज भी कई ऐसे कलाकार हैं जिन्हें जंग में लड़ना पड़ा। जंग खतम होने पर या फिर जंग के दौरान भी इन कलाकारों ने जंग के अनुभवों, उससे हुए मानसिक और शारीरिक आघातों और उसके प्रति अपने विचारों को चित्रों में उतारा। इन कलाकारों में से कुछ हैं – कैथे कोलविट्ज, जॉर्ज ग्रॉस और स्टैनले स्पेंसर। दुर्भाग्य से कला का इस्तेमाल जंग को सराहने और उकसाने के लिए भी हुआ है।

Anas Muhammad Jaber Abu Zarga  
Age 13



चित्र: विक्लो, आयरलैंड से ऑक्टविया द्वारा अनस मुहम्मद जबेर अबु जर्का के लिए।

अलग-अलग देशों की सरकारों ने कलाकारों को, कला के माध्यम से, जंग दर्ज करने का भी ज़िम्मा सौंपा (जैसे ब्रिटेन के कलाकार पॉल नैश को दोनों विश्वयुद्धों के दौरान)। कला थेरेपी से लोगों को जंग से उबरने में भी मदद मिली है।

आज मैं तुम्हें दो सवालों के साथ छोड़ना चाहती हूँ। तुम कला के माध्यम से जंग पर क्या विचार रखना चाहोगे? अगर तुम ‘बड़स ऑफ गाजा’ वेबसाइट पर गए तो तुम्हारा अनुभव क्या रहा?

सभी चित्र: <https://www.birdsofgaza.com/> से साधारण



क्यों-क्यों मैं इस बार का हमारा सवाल था:

पुरुषों की मूँछें होती हैं और  
महिलाओं की नहीं, ऐसा क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

शादी के लिए कानून द्वारा  
निर्धारित उम्र लड़कों व लड़कियों  
के अलग-अलग क्यों हैं? क्या इसे  
बढ़ाना चाहिए? हाँ तो क्यों, और  
नहीं तो क्यों नहीं?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब  
हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/  
कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें  
merapanna.chakmak@eklavya.  
in पर ईमेल कर सकते हो या फिर  
9753011077 पर व्हॉट्सएप भी कर  
सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते  
हो। हमारा पता है:

ચક્રમક

एकलव्य फाउंडेशन,  
जमनालाल बजाज परिसर,  
जाटखेड़ी, फौर्यून कस्तूरी के पास,  
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

महिलाओं के चूल्हे फूँकने पर  
उनकी मूँछें जल जाती हैं। इसलिए  
उनकी मूँछें नहीं होती हैं।

पवन कुमार, तीसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर,  
कानपुर, उत्तर प्रदेश

पुरुषों की मूँछें इसलिए होती हैं क्योंकि उनकी दाढ़ी होती है। दाढ़ी के बाल बढ़ते जाते हैं और पूरे चेहरे पर फैल जाते हैं। दाढ़ी के बाल फैलकर मूँछें बन जाते हैं। परन्तु महिलाओं की दाढ़ी ही नहीं होती है तो मूँछें कहाँ से होंगी।

इसरा, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

महिलाओं को मूँछें इसलिए नहीं होतीं क्योंकि उनकी त्वचा मुलायम और बेहतर होती है। वो अपनी स्किन की ज्यादा केयर करती हैं। मूँछें निकल आने से पहले वो वैक्स कर लेती हैं या स्क्रब करती हैं। मूँछें आने से पहले ही गायब कर देने से उनकी मँछ नहीं होतीं।

पल्लवी राज पेंदाम, सातवीं, जिला परिषद स्कूल, लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

पुरुषों की पहचान होती है मूँछ। इसलिए पुरुषों की मूँछें आती हैं। महिलाएँ बिना मूँछों के अपनी पहचान बताती हैं। और बिना मूँछों के सून्दर होती हैं। इसलिए महिलाओं की मूँछें नहीं होतीं।

पिंकी अहिरवार, छठवीं, रीडिंग रूम छावनी, एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

पुरुषों की मूँछें इसलिए होती हैं क्योंकि वो अपनी मूँछों को ताव देने के लिए बढ़ाते हैं। लेकिन महिलाएँ ऐसा नहीं करती हैं।

मयंक, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

पुरुषों की मूँछें इसलिए होती हैं कि स्टाइल दिखा सकें।  
महिलाएँ इसलिए नहीं रखती कि वे अच्छी लगें।

अनुष्का मालवीय, छठवीं, रीडिंग रूम छावनी,  
एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

पुरुषों की मूँछें होती हैं वरना महिला और पुरुष में फर्क पता नहीं चलेगा। एक प्रकार से पुरुषों की मूँछें प्रकृति द्वारा बनाई गई हैं। जैसे कि कुछ लोग गलत कदम उठा लेते हैं तो लोग उनसे कहते हैं कि इनकी मूँछें नहीं हैं, इनकी मूँछें चली गई हैं। तो उन्हें सम्मान नहीं मिलता, उनकी इज्जत और मर्यादा बहुत कम हो जाती है। महिलाओं की मूँछें इसलिए नहीं होतीं कि महिलाओं की मूँछें अच्छी नहीं लगेंगी। इसीलिए महिलाएँ अच्छे से अच्छा सेकअप करती हैं। जब पुरुष नाच-गाने में होते हैं तो देखो मूँछ काट लेते हैं ताकि मूँछों पर क्रीम न चमके।

काजल देवी, सातवीं, स्वतंत्र तालीम, मलसराय,  
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

~~प्रश्न~~  
**पुरुषों की मूँछें होती हैं महिलाओं की नहीं। इसका क्या?**  
**उनकी जीरकी का अन्न मिलता है तो उनकी मूँछ नहीं होती है मूँछ होती है तो वह सुन्दर नहीं दिखती। पुरुषों जीर महिलाओं से कोई अन्न नहीं दिखता।**



चित्र: कल्पना, चौथी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

ओरतों को छुटे होते हैं,  
ये ही वे ज्ञान

ग्रने छुटी हैं.



ओरतों को छुटे होते हैं,  
छोटी होती हैं.

ज्ञान के मुद्दे.

चित्र: अश्विन मनोज गेदाम, चौथी, ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक  
शाला, लोहारा, चन्दपुर, महाराष्ट्र

पुरुषों की मूँछें इसलिए होती हैं क्योंकि वे रेजर का उपयोग करते हैं। और चूँकि महिलाएँ रेजर का उपयोग नहीं करती हैं इसलिए महिलाओं की मूँछें नहीं होती हैं।

मानवी वरकड़े, पाँचवीं, एमएलएसी केन्द्र सलैया,  
बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

अगर औरतों की मूँछें होतीं तो बच्चा छोटे से ही माँ से प्रेम नहीं करता। इसलिए औरतों की मूँछें नहीं होती हैं। और पुरुषों की तो मूँछ होती है। इसलिए बच्चे छोटे से ही पापा से डरते हैं।

बृजेश, तीसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर,  
उत्तर प्रदेश

जब मैं बहुत छोटी थी तो सोचती थी कि अपनी मूँछ पापा जैसी ही रखूँगी। जब भी मैं अपनी ऊँगली से मूँछों पर ताव दूँगी तो सभी लोग मेरी मूँछों की प्रशंसा करेंगे। मैं चाहती थी कि मूँछें हों तो पापा जैसी, वरना ना हो। तब मुझे क्या पता था कि मेरी पहली चाहत तो नहीं, दूसरी चाहत सार्थक हो जाएगी। यानी कि मेरी मूँछें ही नहीं आई। वो तो मुझे अब पता चला कि पुरुषों में एंड्रोजन हार्मोन के कारण उनके चेहरे पर मूँछें होती हैं। महिलाओं में एंड्रोजन हार्मोन के बजाय एस्ट्रोजन हार्मोन पाया जाता है। इस हार्मोन का दाढ़ी और मूँछों से कोई लेना-देना ही नहीं होता।

आरोही प्रसाद, सातवीं, गुजरात पब्लिक स्कूल, बड़ौदा, गुजरात

यदि महिलाओं की मूँछें होतीं तो पुरुष और महिला में कोई अन्तर ही नहीं रहता। यदि महिला पैंट-शर्ट पहन लेगी और उसकी मूँछ रहेगी तो वो पुरुष जैसी ही दिखेगी। और यदि पुरुष साड़ी पहन लेंगे तो अच्छे नहीं लगेंगे। इसलिए भगवान ने ही ऐसा किया है कि पुरुष और महिला थोड़ा अलग दिखें।

दिव्या यादव, सातवीं, चकमक ब्रॉडबैंड, पावरज़ाणडा, शाहपुर, बैतूल, मध्य प्रदेश

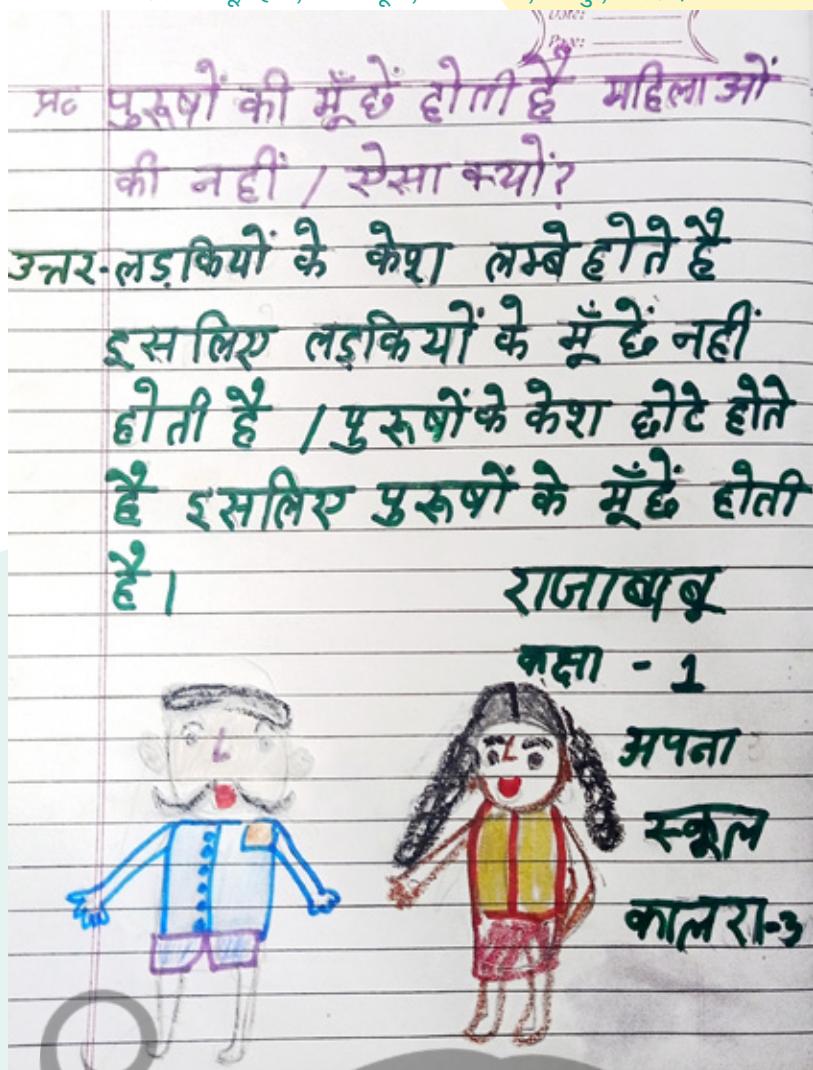
अगर औरतों की मूँछें होतीं तो कोई उनसे शादी नहीं करता। इसलिए भगवान ने औरतों को मूँछें नहीं दीं।

अर्जुन, दूसरी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

वैसे तो मूँछें पुरुषों की होती हैं, पर कुछ महिलाओं की भी मूँछें होती हैं। मगर वो कुछ क्रीम की मदद से हटा लेती हैं। या फिर ब्यूटी पार्लर भी जाती हैं। ज्यादातर गाँव के लोग महिलाओं को खूबसूरती का प्रतीक मानते हैं। और महिलाओं को दाढ़ी-मूँछ में देखना उन्हें पसन्द नहीं होगा। इसलिए हल्की-हल्की मूँछें होने पर लड़कियाँ उन्हें हटा देती हैं।

राज सरयाम, छठवीं, चकमक ब्रॉडबैंड, ग्राम चिरमाटेकरी, शाहपुर, बैतूल, मध्य प्रदेश

चित्र: राजाबाबू, पहली, अपना स्कूल, कालरा सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश



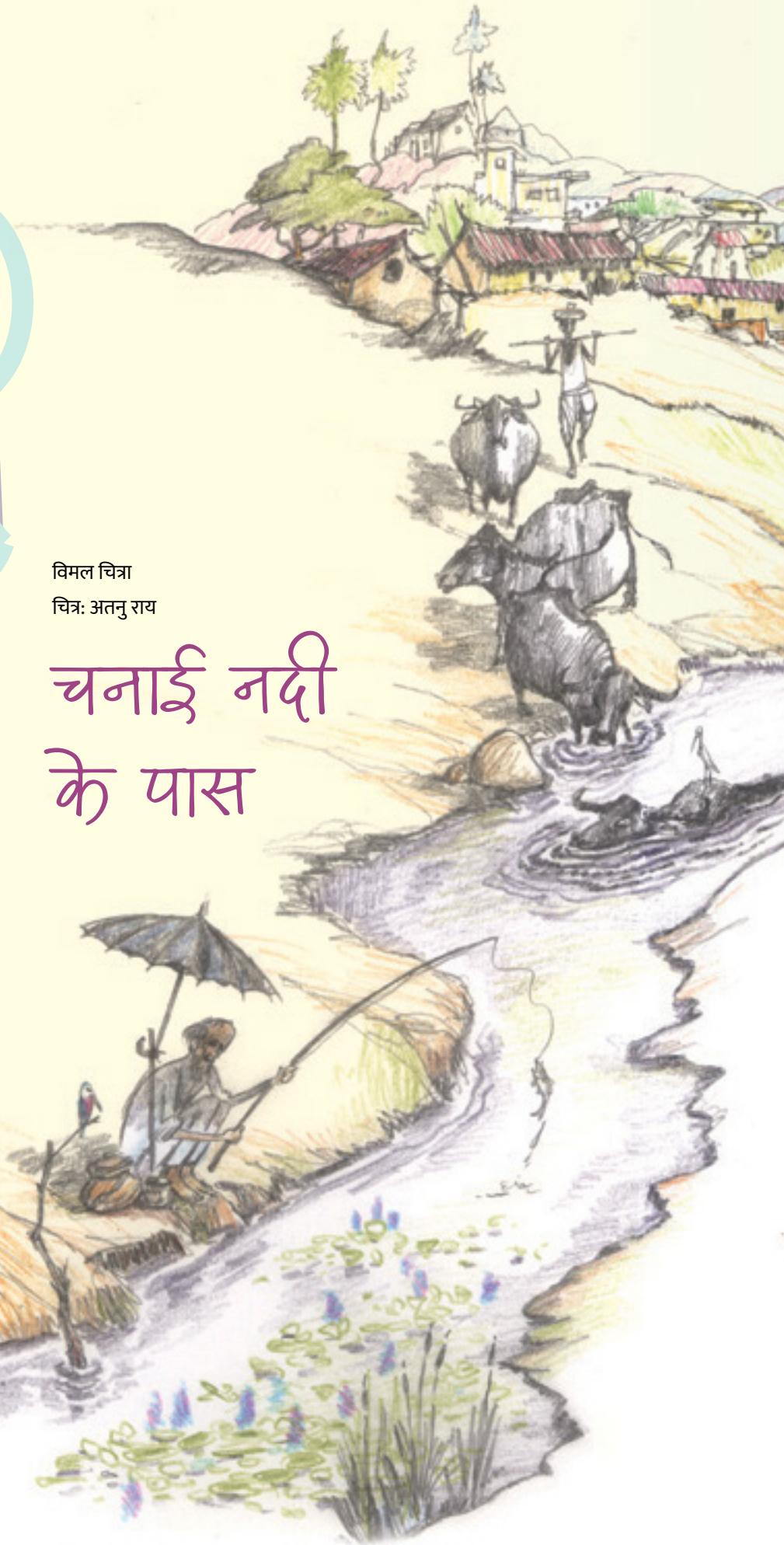
# नदी

केदारनाथ अग्रवाल

नदी है  
अब भी है  
तट के पास  
तट से थठी

आदाब दोस्तो!

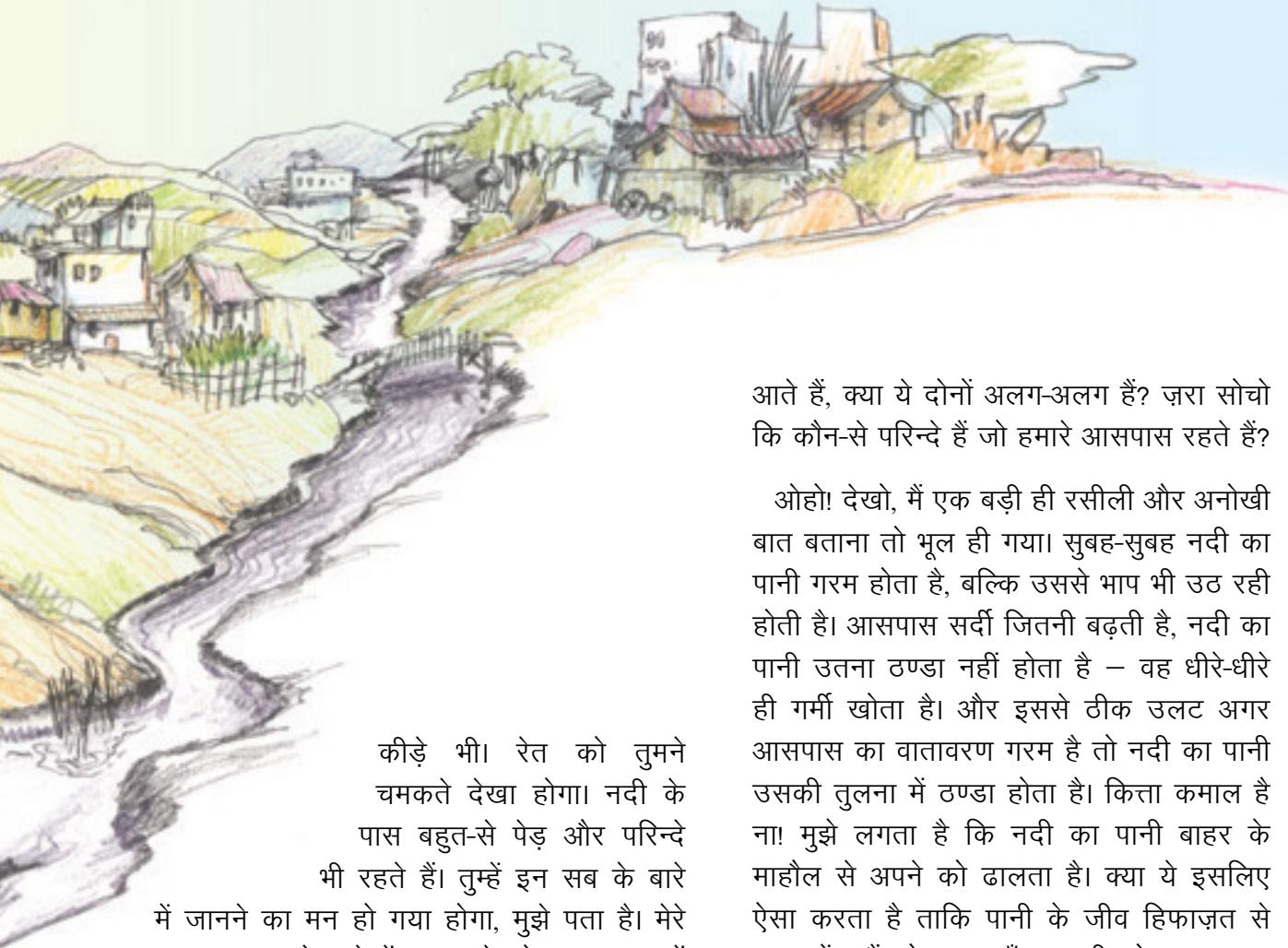
तुम सब जाने कहाँ-कहाँ  
रहते होगे। मैं नदी के पास  
रहता हूँ। नदी के पास  
मछुआरे, मटकों को आकार  
देने वाले कुम्हार, कपास से  
धागा और फिर उससे कपड़े  
बनाने वाले बुनकर रहते हैं।  
कुछ किसान भी, जो  
नदी का पानी लेकर  
ककड़ी, तरबूज और  
गन्नों की खेती करते  
हैं। हम सब साथ  
में यहाँ नदी के  
पास रहते हैं। पर  
नदी के सबसे  
पास रहती है रेत  
और रेत के अनगिन



विमल चित्रा

चित्र: अतनु राय

## चनाई नदी के पास



कीड़े भी। रेत को तुमने चमकते देखा होगा। नदी के पास बहुत-से पेड़ और परिन्दे भी रहते हैं। तुम्हें इन सब के बारे में जानने का मन हो गया होगा, मुझे पता है। मेरे पास इन सब के बारे में चावल के बोरा भरकर बातें हैं। उनमें से कुछ मैं तुम्हें बताता हूँ।

कल जब मैं नदी के पास था, तो नदी की धार पर एक पंछी गिर पड़ा। मुझे अचरज हुआ। मैंने देखा कि जिसने पानी में डुबकी लगाई है वो एक लम्बी चोंच वाला पंछी है। उसकी चोंच में एक छोटी मछली फँसी है। वो डुबकी मारकर मछली पकड़ता है। वो पास के पेड़ पर बैठ पानी से गीले अपने पंख झाड़ने लगा। वो गोलू-मोलू सा गद्देदार पंखों वाला भूरे रंग का एक पंछी था। तब मैंने जाना कि ये पंछी तो नदी के पास रहने वाला पंछी है। इसे मैंने बरस्ती में कभी नहीं देखा। मैंने इसका नाम अपने हिसाब से चोंचूँ रख दिया। फिर मुझे लगा कि हमारे साथ बरस्ती में रहने वाले पंछी और दूर से आने वाले पंछी जो शाम-सवेरे आसमान में आते-जाते नज़र

आते हैं, क्या ये दोनों अलग-अलग हैं? ज़रा सोचो कि कौन-से परिन्दे हैं जो हमारे आसपास रहते हैं?

ओहो! देखो, मैं एक बड़ी ही रसीली और अनोखी बात बताना तो भूल ही गया। सुबह-सुबह नदी का पानी गरम होता है, बल्कि उससे भाप भी उठ रही होती है। आसपास सर्दी जितनी बढ़ती है, नदी का पानी उतना ठण्डा नहीं होता है – वह धीरे-धीरे ही गर्मी खोता है। और इससे ठीक उलट अगर आसपास का वातावरण गरम है तो नदी का पानी उसकी तुलना में ठण्डा होता है। कित्ता कमाल है ना! मुझे लगता है कि नदी का पानी बाहर के माहौल से अपने को ढालता है। क्या ये इसलिए ऐसा करता है ताकि पानी के जीव हिफाज़त से रह सकें? मैं सोच रहा हूँ, तुम भी सोचना!

गर्मी आ गई है और गर्मी के फल भी। अरे! पता है बहुत गर्मी में जब कहीं-कहीं नदी का पानी सूखता है और ऊपर पानी नज़र नहीं आता, तो बरस्ती में सब कहते हैं कि सिर्फ़ नदी के ऊपर बहता पानी सूखा है। पानी की धार ज़मीन के नीचे अब भी चल रही है। यानी नदी का पानी ज़मीन के अन्दर उसी तरह से बह रहा है? ओह! क्या बात है! मुझे तो ये बात सुनकर बड़ा ही मज़ा आया। शायद तुम्हें भी आया होगा। अगली बार मछुआरों के बारे में बताऊँ? या बेर के पेड़ों के बारे में जानना है? लिखना। मेरा पता है—

पेरू

चनाई नदी के पास

वही सहजन के पेड़ों वाला घर



# गाय की शैतानी

वेदान्त

चित्र: शुभम लखेरा

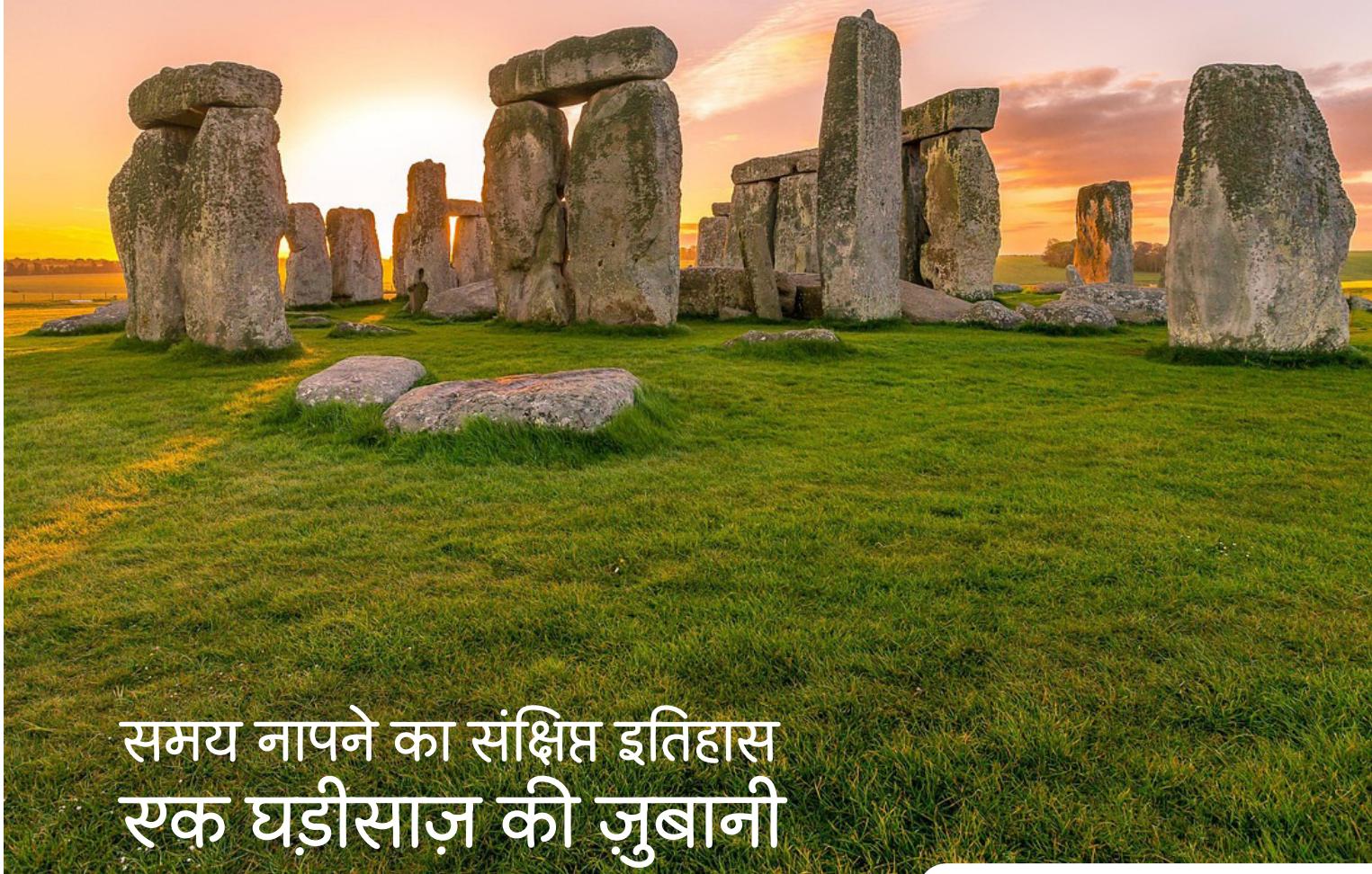
एक गाय थी। वह बहुत नटखट थी।

एक दिन उसका मालिक उसके पास बैठा था। तो गाय ने उसके ऊपर गोबर कर दिया।

फिर एक लात मारी तो मालिक सीधा कीचड़ में गिर गया।

फिर वह घर गया। घर में कोई नहीं था। तो वह गया पड़ोसी के घर। और पड़ोसी हो गया बेहोश।

वेदान्त, दूसरी, अःजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान



# समय नापने का संक्षिप्त इतिहास स्क घड़ीसाज़ की ज़ुबानी

जाक़ प्रैन्डरगैस्ट

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र 1. स्टोनहैन्ज़ को सोलर कैलेण्डर के एक किरम की तरह बनाया गया था।

एक बार मैंने 1950 की एक घड़ी को ठीक किया। उसका मालिक मेरे काम के गुण गाए जा रहा था और साथ ही मेरे काम की कीमत देने से मना कर रहा था। समय के फलसफे के बारे में बड़बड़ाते हुए उसके हाथों से घड़ी छूट गई और संगमरमर के फर्श पर गिर पड़ी। उसका शीशा चूर-चूर हो गया और घड़ी की सुइयाँ अनियंत्रित ढंग से घूमने लगीं। ढलते हुए सूरज की रोशनी अन्दर आ रही थी — उसकी तेज़, तिरछी किरणें मुझे ये याद दिला गई कि हमारे पूर्वज बीतते हुए समय को कैसे दर्ज करते थे...

सूरज की गति के आधार पर हमने हमेशा समय के बीतने को नापा है। समय का नापना हमारे लिए बहुत ज़रूरी रहा है। इसीलिए तो हमारे पूर्वजों ने काफी मेहनत से स्टोनहैन्ज़ जैसा अद्भुत प्रागैतिहासिक (prehistoric) स्मारक बनाया। इस विशाल सोलर कैलेण्डर का पहला हिस्सा आज से लगभग 4,300 साल पहले बनाया गया था।

लेकिन ये अनोखा नहीं हैं। दुनिया भर में कई सारी अतिप्राचीन सोलर वेधशालाएँ (observatories) हैं। इनमें पेरु के चैकिलो टीले (जो 200-250 ईसा पूर्व में बनाए गए थे) और ऑस्ट्रेलिया आदिवासीय बुर्डी यौऐंग पत्थर व्यवस्था (उम्र अज्ञात) शामिल हैं। दुनिया में अनेक समुदायों ने, एक-दूसरे से हजारों मील की दूरी पर, स्वतंत्र रूप से ऐसी

कुछ जगहों का निर्माण किया जो बीतते समय को दर्ज कर सकती हैं।

### घड़ियाँ बनीं ज़रूरी

विकास के साथ जैसे-जैसे समुदाय शहर, रियासत और राज्य में बदले और समाज एक-दूसरे से अलगाते गए, समय का महत्व बढ़ता गया और यह घण्टों में बँट गया।

मैसोपोटेमिया (वर्तमान इराक) में रहने वाले सुमेरी (4100-1750 ईसा पूर्व) लोगों का गणित था कि एक दिन में लगभग 24 घण्टे हैं और हर घण्टा 60 मिनट लम्बा है।

समय नापने के लिए पहले सूरज, तारों और पानी का इस्तेमाल किया जाता था। शुरुआती घड़ियों में पहले बनीं धूप घड़ियाँ। यह सूरज की स्थिति से बनने वाली परछाई के आधार पर समय को नापती थीं। फिर बनी जल घड़ियाँ। इनमें समय नापने के लिए एक बर्तन से दूसरे में पानी के धीरे बहाव का इस्तेमाल होता था। ये बाबिल, प्राचीन यूनान, फारस (वर्तमान ईरान), भारत और चीन में भी पाई गई हैं।

अन्य किसी की घड़ियाँ जो इस्तेमाल में थीं, वो हैं — समय छड़ी और कैण्डल घड़ी। समय छड़ी भारत, तिब्बत और फारस से मिली हैं। और कैण्डल घड़ियाँ जापान, प्राचीन चीन, मैसोपोटेमिया और इंग्लैण्ड में इस्तेमाल हुआ करती थीं।

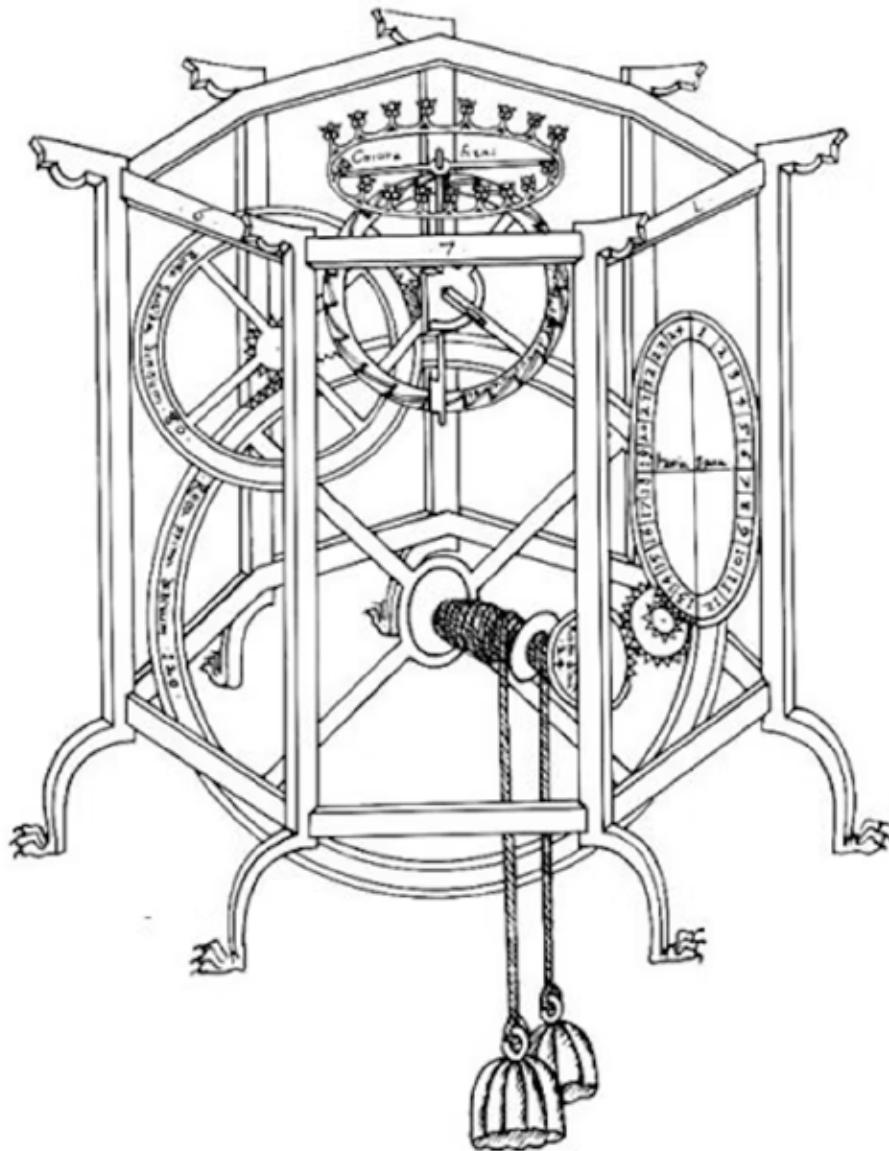
चित्र 2. फारस से मिली एक प्राचीन जल घड़ी।



प्राचीन मिस्र वासियों ने भी समय नापने के लिए 24 घण्टों का तरीका अपनाया था (1550-1069 ईसा पूर्व के आसपास)। लेकिन इन 'घण्टों' की लम्बाई इस पर निर्भर करती थी कि साल का कौन-सा समय चल रहा है। गर्मियों में घण्टों की लम्बाई सर्दियों से ज्यादा होती थी। ये माप सूरज पर आधारित थे – 12 घण्टे दिन के और 12 घण्टे रात के। 1000-800 ईसा पूर्व के आसपास मिस्र वासियों ने समय की इस पद्धति को दर्शाने के लिए धूप घड़ी का इस्तेमाल करना शुरू किया। चूंकि धूप घड़ियों का इस्तेमाल रात को नहीं हो सकता था, इसलिए दिन ढलने के बाद वे जल घड़ियों का इस्तेमाल करते थे।

यूरोप में समय मापन का विकास 700-1300 ईस्वी के बीच कुछ धुँधला-सा जाता है। क्योंकि सारी घड़ियों को यूरोप के लिखित रिकॉर्ड में एक ही लैटिन शब्द होरोलोजियम (*Horologium*) से बताया गया है, जिससे उसके बारे में ज्यादा समझ में नहीं आता है।

तेरहवीं शताब्दी में, अरबी एस्ट्रोलैब (ऐसे उपकरण जो समय की गणना कर सकते हैं और नाविकों को उनकी स्थिति निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं) में घटकों की गति को नियंत्रित करने के लिए गियर के उपयोग का प्रमाण मिला है। और इससे बहुत पहले प्राचीन यूनानी एंटीकिथेरा तंत्र, जिसे दुनिया का पहला कम्प्यूटर माना जाता है,



चित्र 3. द डोण्डी द्वारा उकेरी उनकी खगोलीय घड़ी का निचला हिस्सा।

लगभग 100 ईसा पूर्व का है। ये दोनों उपकरण ग्रहों की गति की सटीक भविष्यवाणी करते थे।

इस बीच, 1088 ईस्वी में चीन के सु सोंग ने एक खगोलीय घड़ी तैयार की थी। यह पानी से चलती थी। इस समय अरबी और चीनी समाज अपने पश्चिमी ईसाई समकक्षों की तुलना में तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत थे।

## मशीनी घड़ियों का आविष्कार

ईसाई मठ प्रार्थना के समय को लेकर इस्लाम और यहूदी धर्म से ज्यादा सख्त थे। दिन में सात बार प्रार्थना करना पड़ती थी जिनमें से सैकर्ट प्रार्थना मध्याह्न में होती थी। किहीं दो प्रार्थनाओं के बीच की समय अवधि एक समान थी। घड़ियों का यूरोप में महत्व शायद इसलिए भी ज्यादा हुआ करता था कि अक्सर बादलों से घिरे आसमान के कारण सूरज या तारों को देखकर समय का पता लगाना मुश्किल होता होगा।

ऐतिहासिक रिकॉर्ड से हम ये तो निश्चित रूप से कह नहीं सकते कि इन मठों के सन्तों ने ही पहली मशीनी घड़ियाँ बनाईं। लेकिन हमें इतना तो पता है कि पूरी तरह से मशीनी घड़ियाँ चौदहवीं शताब्दी में दिखने लगीं।

इन घड़ियों का पहला जिक्र इतालवी चिकित्सक-एस्ट्रोनोमर और मैकेनिकल इंजीनियर जिओवानी द डोण्डी ने किया है। उन्होंने बताया कि इन शुरुआती घड़ियों को चलाने के लिए गुरुत्वाकर्षण बल का इस्तेमाल किया गया – ये वज़न से चलती थीं। ये आज की सटीक



चित्र 4. एटीकिथेरा तंत्र का मॉडल।

घड़ियों की तरह नहीं थीं और दिन में 15-30 मिनट आगे-पीछे चलती थीं। बड़े शहरों में ये घड़ियाँ दिखने लगी थीं। लेकिन चूँकि इन घड़ियों में डायल नहीं होता था, इसलिए घण्टों का संकेत घण्टी बजाकर दिया जाता था। ये संकेत प्रत्येक शहर के बाजार के समय और प्रशासनिक आवश्यकताओं को व्यवस्थित करने लगे थे।

घड़ियों को चलाने के लिए ज़रूरी ऊर्जा प्रदान करने की एक विधि के रूप में कुण्डलित स्प्रिंग्स (coiled springs) पन्द्रहवीं शताब्दी में यूरोप में दिखाई देने लगे। इसने सटीकता में सुधार के लिए कुछ नहीं किया,

लेकिन इससे घड़ी का आकार कम हो पाया। और इस तरह घड़ी एक व्यक्तिगत चीज़ और हैसियत का प्रतीक बन गई – तुम देख सकते हो कि उस दौर की ऑइल पैटिंग में लोगों की घड़ियों को गर्व से प्रदर्शित किया गया है।

उच्च वैज्ञानिक क्रिस्चियन ह्यूजेंस ने पहली बार लगभग 1656 में घड़ी में पेंडुलम लगाया था। इससे घड़ी की सटीकता में काफी सुधार हुआ। अब यह दिन में 15 सैकेंड ही आगे-पीछे होती थी। ऐसा इसलिए क्योंकि पेंडुलम के हर दोलन (swing) को पूरा होने में लगभग समान समय लगता था।

नतीजतन तारों के अवलोकनों सहित तमाम वैज्ञानिक अवलोकनों में समय का अधिक सटीकता से उपयोग किया जा सका। इसका मतलब यह भी था कि घड़ियाँ अब मिनट की सटीक सुई दिखा सकती थीं।

### समय नापने का भविष्य

आज, हम दुनिया में जहाँ भी हैं, समय एक एकीकृत संरचना है। आधुनिक समाज में हम समय को आम तौर पर मिनट या सैकेंड तक व्यवस्थित करते हैं। लेकिन अधिक से अधिक सटीक मापों की खोज जारी है। 2021 में, वैज्ञानिकों ने एक नए सबसे छोटे समय अन्तराल ज़ेप्टोसैकेंड की पहचान की। यह प्रकाश के एक कण को हाइड्रोजन के एक अणु से गुज़रने में लगने वाले समय के बराबर है और इसका शोध में महत्व है। हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के लिए तो मिनट और सैकेंड ही काफी हैं, क्यों?



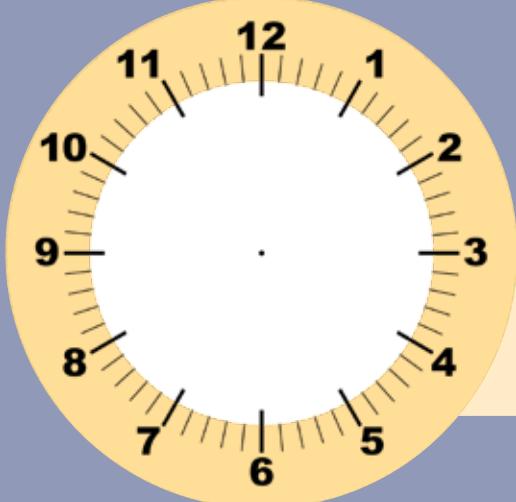
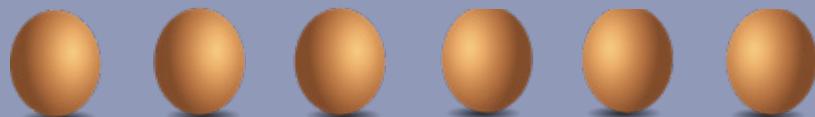
चित्र 5. 1316 ईस्वी की चीन की जल घड़ी (जल घड़ियाँ सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेषों में भी पाई गई हैं)।

जाक प्रेंडरगैस्ट बर्मिंगहम सिटी यूनिवर्सिटी में हॉरोलॉजी (समय और उसके मापन का अध्ययन) के लेक्चरर हैं। ये लेख 28 दिसम्बर 2023 को ऑनलाइन पत्रिका द कान्वर्सेन में छपे उनके लेख पर आधारित हैं।

1. दिए गए बॉक्स की खाली जगहों में 1 से 9 तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि हर पंक्ति व कॉलम की संख्याओं का जोड़ 15 हो। ध्यान रखना तुम कोई भी संख्या दो बार नहीं लिख सकते।

2		6
	5	
		8

2. सारा के पास 6 अण्डे थे, जिनमें से 2 उसने अण्डे तोड़े, 2 पकाए और 2 खा लिए। बताओ उसके पास कितने अण्डे बचे?



3. एक आइसक्रीम वाले के पास दो साइज़ और दो फ्लेवर में कुल 50 आइसक्रीम थीं। उनमें से 22 चॉकलेट फ्लेवर के बड़े टब, 12 छोटे टब और 26 वनिला फ्लेवर के थे। बताओ कि वनिला फ्लेवर के छोटे टब कितने थे?

4. दो सीधी रेखाओं से घड़ी को तीन भागों में इस तरह बाँटो कि तीनों भागों की संख्याओं का योगफल बराबर हो।

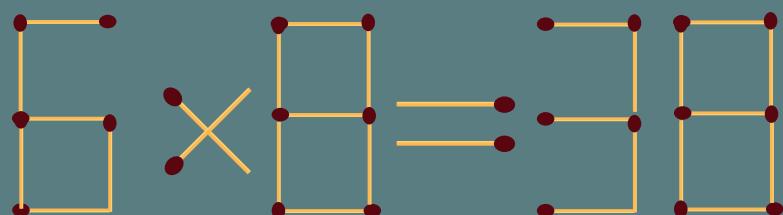
5. एक बूढ़े बाबा 1 बच्ची और 1 मुर्गी लेकर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक आदमी मिला। उसने बाबा से 3 सवाल पूछे—  

- बाबा आपकी उमर कितनी है?
- यह बच्ची आपकी कौन है?
- इस मुर्गी की कीमत कितनी है?

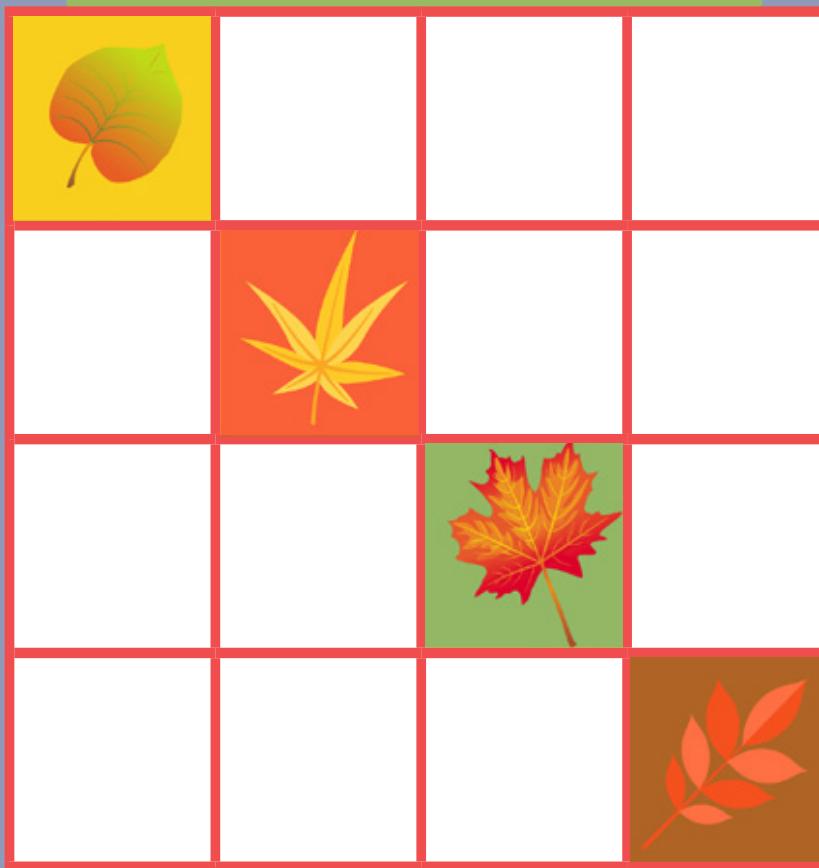
 बाबा ने सिर्फ 1 शब्द बोला और आदमी को तीनों सवालों का जवाब मिल गया। बताओ, उन्होंने क्या कहा होगा?

6. दी गई ग्रिड में कई सारे पेड़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने हूँढे?

से	दे	व	दा	र	अ	ख	शे	ट
म	हु	आ	पी	गी	शो	पा	जू	बे
ल	आ	क	सु	प	क	च	ना	र
इ	म	ली	पा	सा	ल	पी	बाँ	ड
ना	बि	अ	री	ब	र	ग	द	स
ग	ख	ना	म	बू	प	सा	म	ह
फ	ल	र	पा	ल	पी	बो	गौ	ज
नी	ल	गि	री	से	ता	जा	मु	न
जू	म	अ	र्जु	न	जी	स	ची	इ



7. दो तीलियों को हटाकर तुम्हें इस समीकरण को सही करना है। कैसे करोगे?
8. 29 बच्चों की एक लाइन में अर्शी, गुरमीत से 7 स्थान आगे है। यदि गुरमीत का स्थान लाइन के अन्तिम छोर से 17वां हो तो लाइन के शुरुआती छोर से अर्शी का स्थान क्या होगा?
9. ज़ोया एक तस्वीर को देखकर बोली, “यह तस्वीर मेरे पापा के बेटी की है। पर मेरा कोई बहन नहीं है।” ज़ोया झूठ नहीं बोल रही थी। पर यह कैसे हो सकता है?
10. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग पत्ती आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी पत्ती आएगी?



# काथा पच्ची

## फटाफट बताओ

ऐसा कौन-सा शब्द है जिसे लिखते हैं, पर पढ़ते नहीं हैं?

(फ्रैन)

हरी-हरी धरती, हरे-हरे काँटे बीच में बीज और रेशे बाँटे

(लड़क)

एक बला ने मुश्किल डाली जब घर आए बजती ताली

(छज्जम)

दो पाटों के बीच में  
एक धारा सरपट बहती  
चलते रहना ही जीवन है  
इठलाती जाती यह कहती

(फ्रैन)

तीन पैर उसके  
थोड़ा-थोड़ा खिसके  
चौबीस घण्टे करे काम  
करे नहीं तनिक आराम

(झिड़)

बारह घोड़े, तीस गाड़ी  
तीन सौ पेंसठ करें सवारी

(लाल्ल)

तेरी तारीख  
मुझे पता है...

आलोका कहेर  
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

याद हैं पिछली बार मैंने तुझे  
गणित की कुछ तरकीबें बताई थीं।  
आज मैं तुझे तेरी सोची कोई भी  
तारीख पता करके बताऊँगा।

गणित लं\*  
मङ्गलदास

अच्छा!



तू कोई भी एक  
तारीख सोच लो।

25 फरवरी

अब महीने की संख्या को  
5 से गुणा कर लो।

हाँ  
बिलकुल!

$$2 \times 5 = 10$$

अब उसमें  
6 जोड़।

$$10 + 6 = 16$$

महीने की संख्या मतलब  
जनवरी की 1, फरवरी की 2...  
और दिसम्बर की 12, हैं जा?

अब 4 से  
गुणा कर।

$$16 \times 4 = 64$$

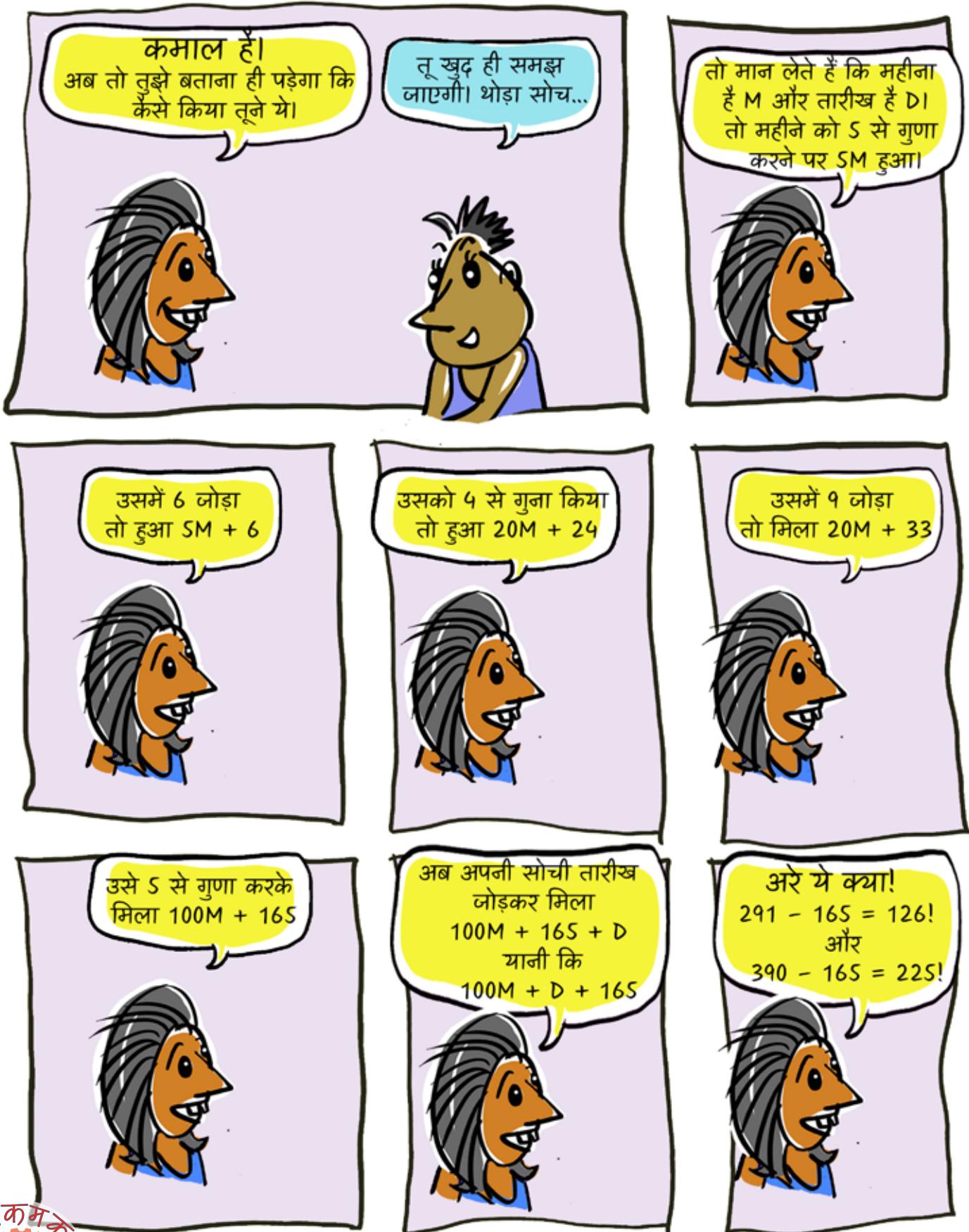
फिर 9 जोड़।

$$64 + 9 = 73$$

अब 5 से  
गुणा कर।

$$73 \times 5 = 365$$

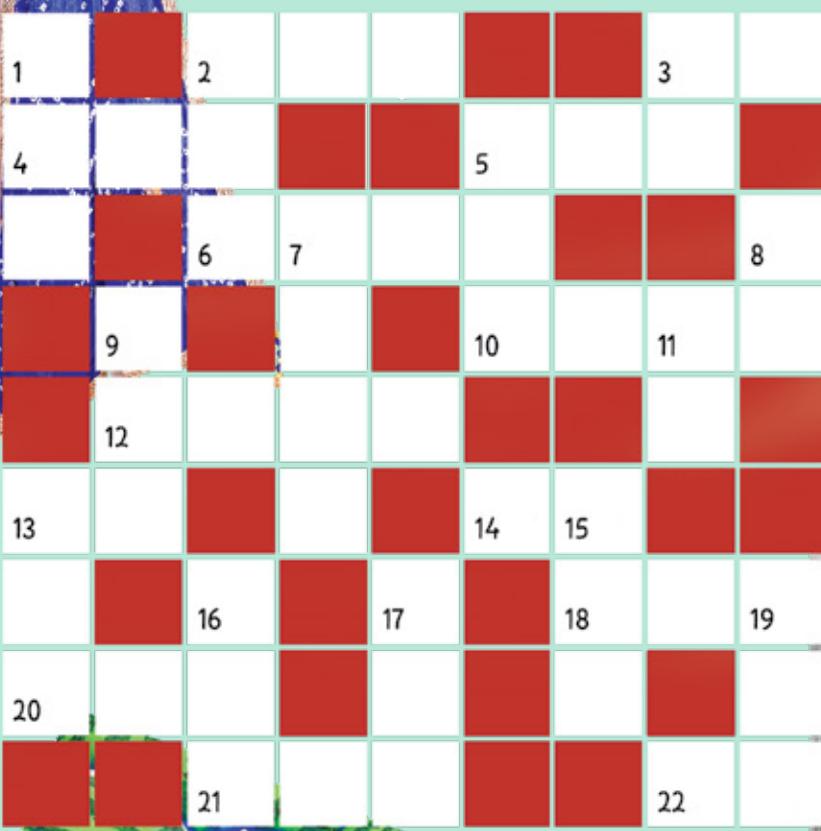






मंक

2



# पहेली चित्र

बाँ से दाँ

ऊपर से नीचे

19



चकमक

34

## सुडोकू 74

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुम्हारों नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

8	4	1				5		
3	9		4	2	8	1		
7		1		8			2	
1	7	5	3	9	8	2	6	4
				7	6	1		
6		4			5	7		
			7		3		4	9
6			6	5	7	1	3	
3		1				7	6	





चित्र: रितु, स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त



चित्र: मीनाक्षी शाह, नौवीं, अऱ्जीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

# कबूतर चोरी

मयंक

पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी  
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश



चित्र: मेधांश नौगांई, एलकेजी, निर्मला कॉन्वेंट स्कूल, काठगोदाम,  
नैनीताल, उत्तराखण्ड

हमारे गाँव में सफेद कबूतर पाले जाते हैं। गाँव में सफेद कबूतरों की रेस भी होती है, जिसको “उड़ान” बोलते हैं। मेरे राहुल चाचा के कल रात 70 कबूतर चोरी हो गए हैं। चाचा के पैसे भी चोरी हो गए हैं। चाचा सुबह उठे तो पिंजड़े का दरवाजा टूटा पड़ा था और सारे कबूतर गायब थे। राजा भैया के घर पर कैमरे लगे हैं। उन्होंने चोरों की वीडियो बनाकर सबके मोबाइल पर डाल दी है।

वीडियो में दो चोर दिख रहे हैं। एक तेज़ मोटरसाइकिल चला रहा है। उसके पास एक कट्टा है जिसमें ज़रूर कबूतर ही होंगे। एक चोर पैदल है उसकी जैकेट बहुत मोटी हो रही है। उसने अपनी जैकेट में कुछ छुपा रखा है। चलते-चलते उसकी जैकेट से एक कबूतर नीचे गिर गया जिसको चोर ने उठाकर अपनी जैकेट के अन्दर डाल लिया।

चाचा ने चोर को पहचान लिया है। वो पड़ोस के गाँव का रहने वाला है। मेरे चाचा कुछ दिन पहले एक उड़ान जीते थे। तब से ही वो रोज़ चाचा से उस कबूतर को माँग रहा था। चाचा ने मना कर दिया। शायद इसी वजह से सारे कबूतर चोरी कर ले गया है। चाचा ने कम्प्लेंट कर दी है।

## गानों का रहस्यास

भावेश

पाँचवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल  
ग्राम पाड़ा, करनाल, हरयाणा

मुझे पंजाबी गाने पसन्द हैं क्योंकि जब मैं उनका मतलब निकालता हूँ तो मुझे अच्छा लगता है। और उन गानों से मेरे दिल को सुकून मिलता है। मुझे एहसास होता है कि वे गाने मेरी ज़िन्दगी को दर्शाते हैं। मुझे उन गानों से जुड़ाव महसूस होता है।



## पाठशाला

जसवन्त गिरी गोस्वामी  
आठवीं, राजकीय उच्च विद्यालय  
शेखासर, फलोदी, राजस्थान

चित्र: रोहित मौर्या, पाँचवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक पाठशाला में पंखा, टेबल, कुर्सी, झाड़ू और दरी की लड़ाई हो गई। झाड़ू ने कहा कि स्कूल की सफाई तो मैं करती हूँ। यह बात सुनकर दरी ने कहा कि सब बच्चे तो मेरे ऊपर बैठते हैं। टेबल और कुर्सी ने रौब से कहा कि अध्यापक मेरे ऊपर बैठते हैं। सबकी बातें सुनकर पंखे ने कहा कि सब ठण्डे दिमाग से सोचो कि मैं भी तो सबको हवा देता हूँ। अरे भाई! हम सब साथ में रहते हैं। तभी तो पाठशाला सुन्दर लगती है। यह सुनकर सब बच्चे ठहाका मारकर हँसने लगे।

# सदी आई - सदी आई

सूर्य आई - सदी आई,  
ओढ़ी मैंने आज रजाई।



किट-किटा रहे मेरे हाँत-कलाई,  
सदी आई - सदी आई।

मफलर जैकट पहने करके सिलाई,  
सदी आई - सदी आई।



लड़इ बनार माँ ने डालकर  
खूब दूध मलाई,  
सदी आई - सदी आई।

ठंड से बच कर रहना,  
धूप नहीं फिर खिल पाई।



सदी आई - सदी आई।

## हरवूर कौर ५-डी

चित्र: हरनूर कौर, चौथी, अलवर पब्लिक स्कूल, अलवर, राजस्थान

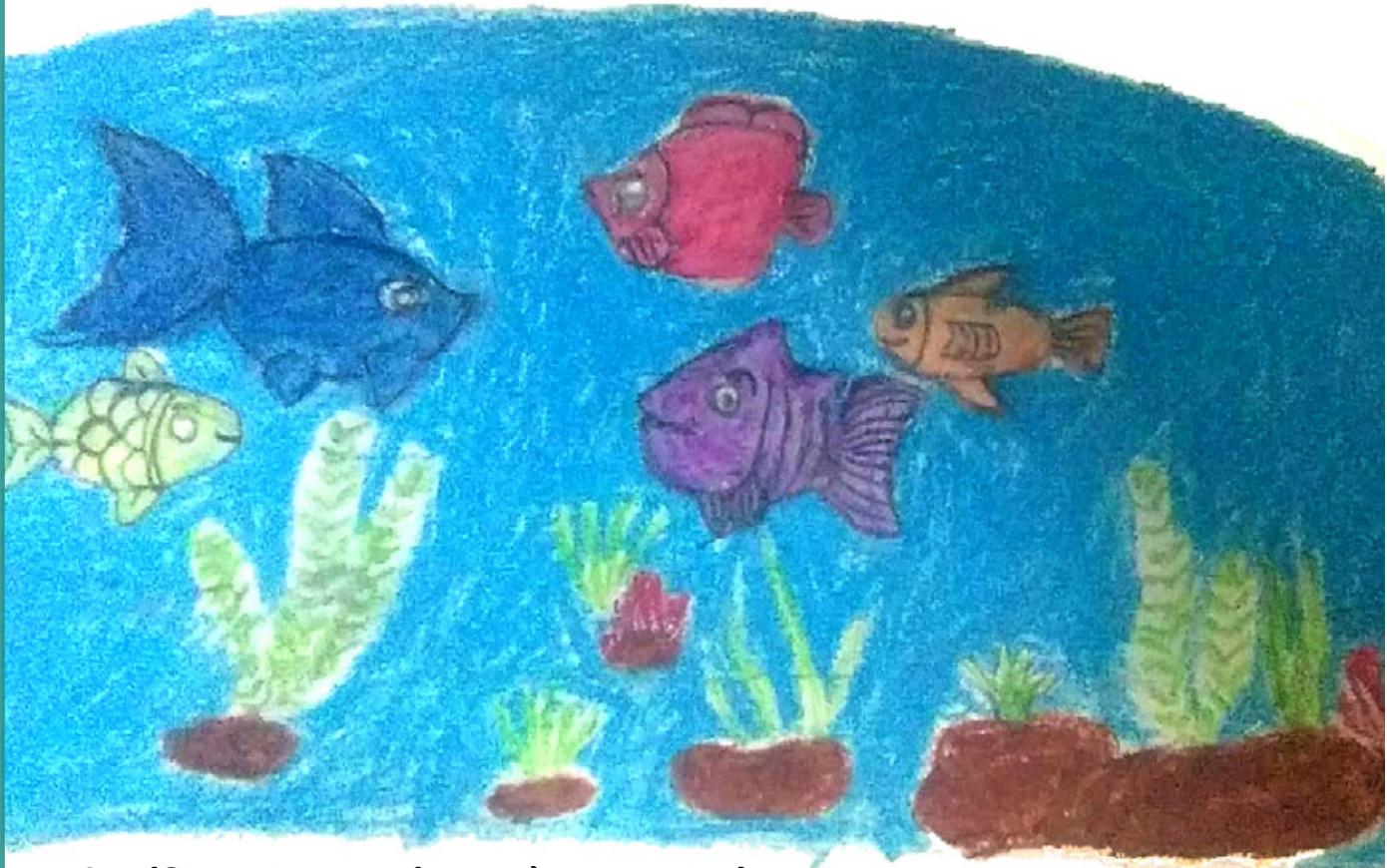
## मन करता है

इशान्नी अग्रवाल  
चौथी, गुरुकूल दि स्कूल  
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

मन करता है मैं उड़ जाऊँ  
आसमान की चिड़िया बन जाऊँ  
चीं-चीं, चूँ-चूँ करके गाऊँ  
हर डाली पर नाच दिखाऊँ

मन करता है मछली बन जाऊँ  
पानी की रानी कहलाऊँ  
सब मेरा सम्मान करें  
मेरी ही बात सुनें

मन करता है चीता बन जाऊँ  
जंगल में दौड़ लगाऊँ  
जानवरों की दोस्त बन जाऊँ  
झूमूँ, नाचूँ, ढोल बजाऊँ



चित्र: हर्ष सिंगल, आकांक्षा स्कूल, मुम्बई, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)

# अनसुलझा सवाल

पूर्वी शेषे  
सातवीं, ज़िला परिषद स्कूल  
लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

मेरे परिवार के सब लोग रिश्तेदार की शादी के लिए बाहर गाँव गए थे। मैं घर पर अकेली थी। रात हो गई थी। मम्मी-पापा अभी तक नहीं लौटे थे। मुझे थोड़ा-थोड़ा डर लगने लगा। मैंने पूरे घर की बत्ती जला दी और टीवी देखने लगी। अचानक घर की बिजली चली गई। मैं बहुत डर गई। बाहर आकर देखा तो सारे गाँव की बिजली तो थी। अकेले मेरे घर में अँधेरा हो गया था।

मैंने दरवाज़ा बन्द किया और नानी के घर चली गई। देर रात मम्मी-पापा लौट आए। वे मुझे लेने नानी के घर आए। बोले, “घर में अँधेरा क्यों है?” मैंने कहा, “सिर्फ अपने ही घर की बिजली गई है” मम्मी ने दरवाज़ा खोला और बिजली के बटन चालू किए तो घर में रौशनी हो गई। मैं आश्चर्य में पड़ गई कि बिजली के बटन तो मैंने बन्द ही नहीं किए थे। फिर मम्मी ने चालू कैसे किए?

मैंने मम्मी को कहा, “बटन तो चालू ही थे, फिर कैसे चालू किए?” मम्मी ने कहा, “डर से तेरा दिमाग खराब हो गया है। अब से अकेली ना रहा कर, साथ चला करा” लेकिन अभी भी यह सवाल मुझे परेशान करता है कि पूरे घर के बिजली के बटन बन्द ही नहीं हुए थे, तो फिर मम्मी ने चालू कैसे किए?

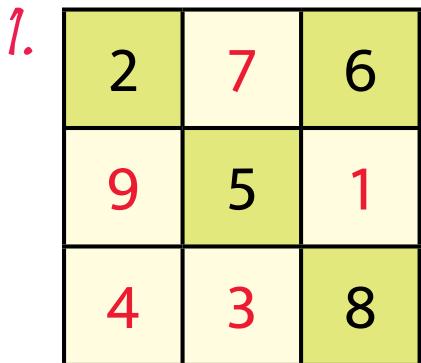


चित्र: नैन्सी यादव, छठवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भरगदा, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

## मेरे पापा

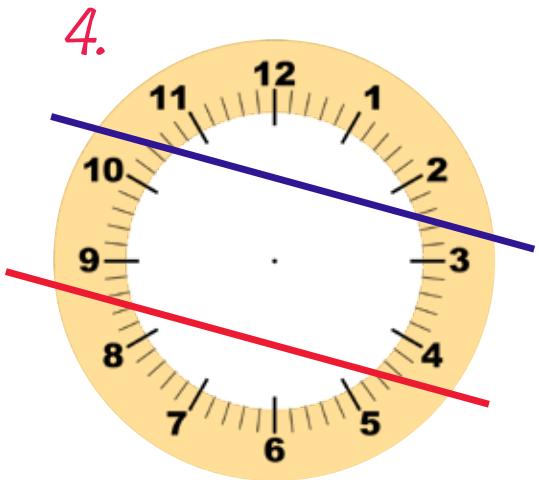
निर्मल केवट  
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला  
सिरलाय, खरगोन, मध्य प्रदेश

मेरे पापा वेल्डिंग का काम करते हैं। वो सुबह 8 बजे घर से निकलते हैं। वो घर से टिफिन लेकर जाते हैं और शाम के छह बजे आते हैं। मेरे पापा को 400 रुपए मिलते हैं।

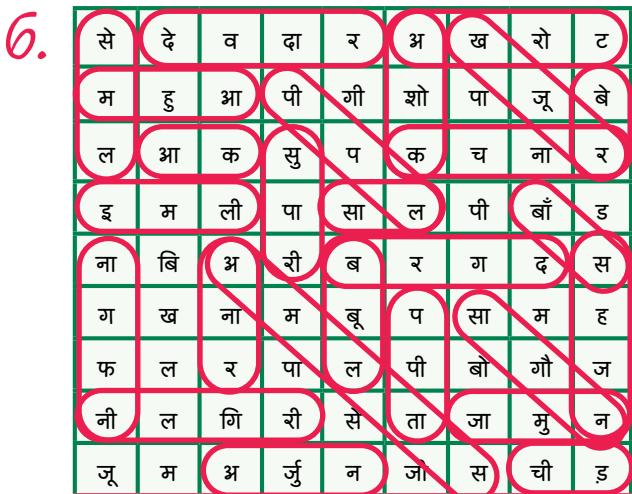


2. 4, क्योंकि उसने जो 2 अपडे तोड़े थे, उन्हें ही पकाया और खाया था।

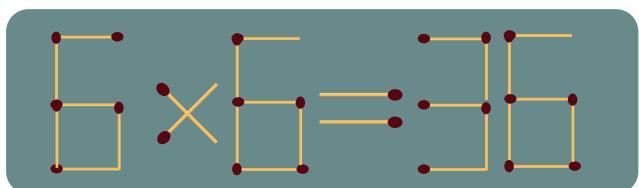
3. चूँकि 26 आइसक्रीम वनिला फ्लेवर की हैं, इसलिए  $50 - 26 = 24$  चॉकलेट फ्लेवर की होंगी। चूँकि चॉकलेट फ्लेवर के 24 टब में से 22 बड़े हैं, इसलिए चॉकलेट फ्लेवर के छोटे टब 2 होंगे। छोटे टब कुल 12 हैं, जिनमें से 2 चॉकलेट फ्लेवर के हैं। इसका मतलब है कि वनिला फ्लेवर के 10 छोटे टब होंगे।



5. नवासी (89)



7.



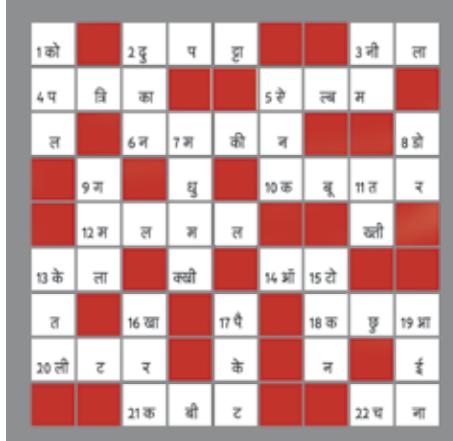
8. अन्तिम छोर से अर्शी का स्थान =  $17 + 7 = 24$ वां  
इसलिए, शुरुआती छोर से अर्शी का स्थान =  $(29 - 24) + 1 = 6$ वां होगा।

9. क्योंकि ज़ोया अपनी ही तस्वीर देख रही थी।

10.



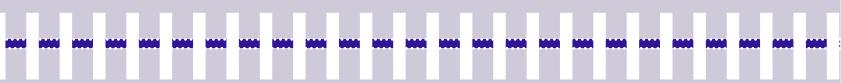
इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



सुडोकू-74 का जवाब

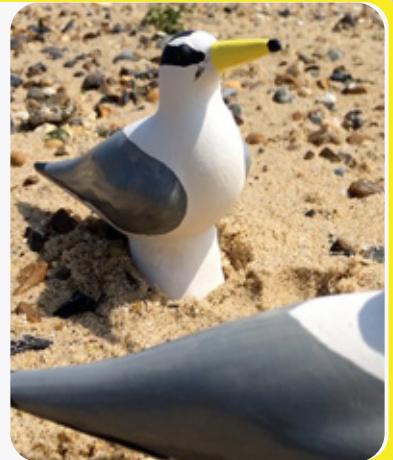
8	2	4	1	7	9	6	5	3
6	3	9	5	4	2	8	1	7
7	5	1	6	8	3	9	4	2
1	7	5	3	9	8	2	6	4
4	9	2	7	6	1	3	8	5
3	6	8	4	2	5	7	9	1
5	1	7	8	3	6	4	2	9
9	4	6	2	5	7	1	3	8
2	8	3	9	1	4	5	7	6

# तुम भी जानो



धोखा देकर बचाना...

पक्षियों को आकर्षित करने की शिकारियों की एक तरकीब है उसी किस्म के नकली पक्षियों का इस्तेमाल। इन्हें डीकॉय कहते हैं। पक्षियों, खासकर पानी के पास रहने वालों, की कुछ किस्में समूह में रहना या घोंसला बनाना पसन्द करती हैं। ये अपनी किस्म के पक्षियों को ज़मीन पर देखकर आकर्षित होती हैं। शायद इसलिए कि उन्हें लगता है कि ये जगह सुरक्षित होगी। इस तरकीब का इस्तेमाल अब दक्षिण इंग्लैण्ड में जैसिका वैग ने लिटिल टर्न पक्षियों के संरक्षण में किया है। इन पक्षियों की आबादियाँ घटती जा रही हैं। जैसिका डीकॉय का इस्तेमाल करके लिटिल टर्न पक्षियों को ऐसी जगहों पर आकर्षित करती हैं जहाँ ये सुरक्षित अपडे दे सकते हैं।



## चाय जो कभी ठण्डी न हो



ये कोई जादू नहीं, एक नए किस्म का कप है। यह कई घण्टों तक, दिन भर भी, तुम्हारी चाय को 50 डिग्री सेल्सियस से 60 डिग्री सेल्सियस के बीच के तुम्हारे पसन्दीदा तापमान पर गर्म रख सकता है। चीनी मिट्टी से बने इस कप की दीवार में कुछ सैन्सर और हीटर लगे होते हैं। सैन्सर कप में रखी चाय (कॉफी, दूध इत्यादि) का तापमान लेते रहते हैं। जब चाय का तापमान तुम्हारे द्वारा सैट किए गए तापमान से कम हो जाता है तो हीटर उसे गर्म करते हैं। कप के नीचे सैल के लिए जगह है। या फिर तुम इसे इसकी तश्तरी पर रखकर उसके प्लग को किसी सॉकेट में भी लगा सकते हो।

अफ्रीका, उत्तर अमेरिका और चीन के रेगिस्तानों में कभी-कभी रेत के विशाल टीले देखने को मिलते हैं। ऐसे टीले पृथ्वी पर ही नहीं, मंगल और शनि ग्रह के चाँद पर भी देखे गए हैं। इन्हें स्टार ड्यून भी कहते हैं। पृथ्वी पर सबसे ऊँचा स्टार ड्यून चीन में पाया गया है जो लगभग 300 मीटर ऊँचा है। इन टीलों के बारे में लोगों की काफी जिज्ञासा रही है। और इनके इतिहास का पता लगाने के लिए मोरक्को के सहारा रेगिस्तान के लाला लल्लिया स्टार ड्यून का अध्ययन हुआ है। लगभग 92 मीटर ऊँचे और 700 मीटर चौड़े इस टीले को बनने में कुछ 900 साल लगे। इसके कुछ हिस्से तो 13,000 साल पुराने हैं। ये भी पता चला है कि ये स्थिर नहीं हैं और हर साल कुछ इंच पश्चिम की ओर बढ़ रहा है।

## रेत के विशाल टीले



मुक्त

रुक्मिक  
43  
अक्टूबर 2021



## दीपाई का नाश्ता



रोहन चक्रवर्ती  
अनुवाद: विनता विश्वनाथन